ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

माघ २०८२ फरवरी २०२६

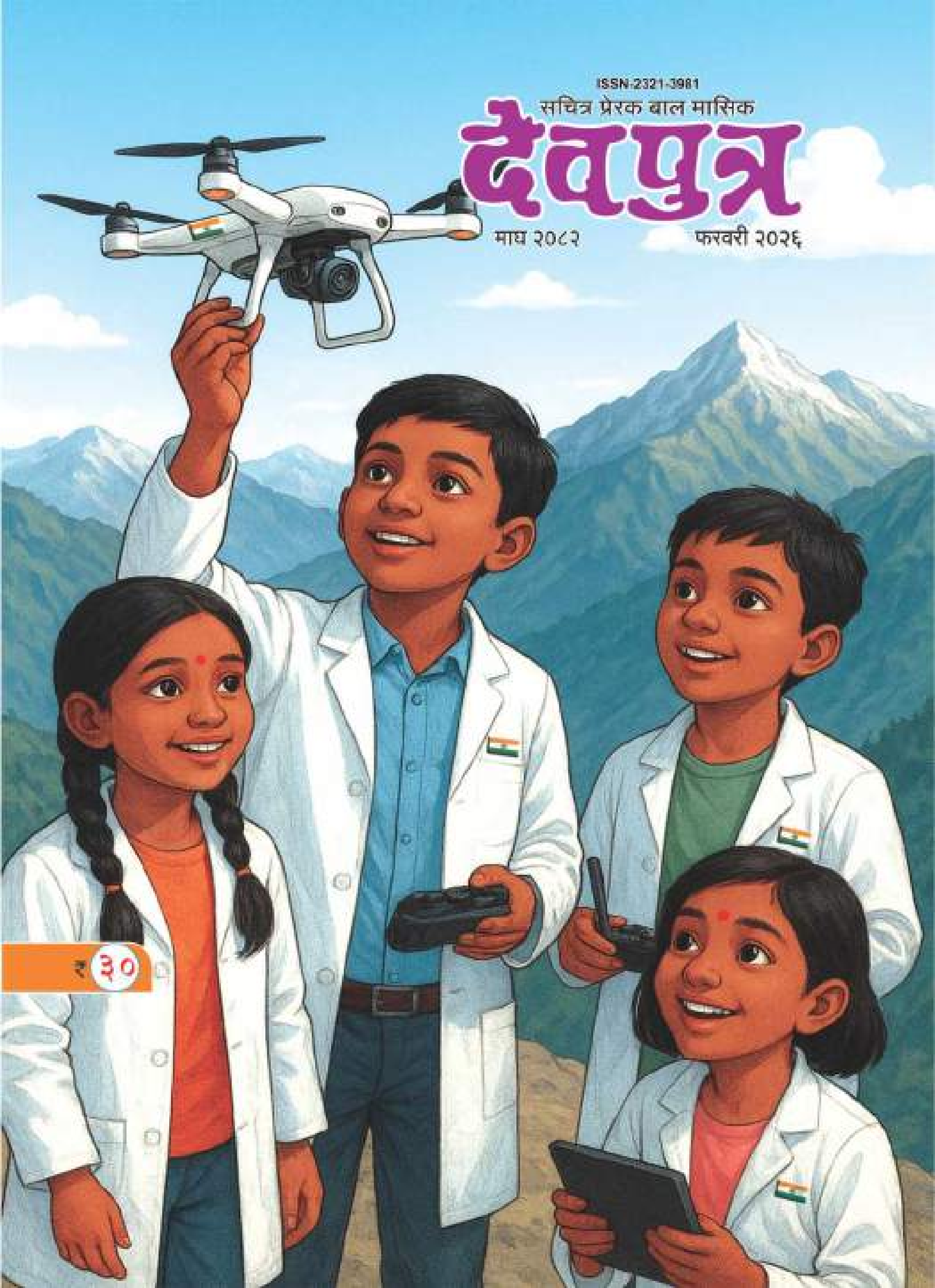

₹ ३०

कविता

चुहिया रानी

– प्रियंका सौरभ

चुहिया रानी छोटी–सी,
दुम हिलाए मोटी–सी।
काली आँखें, गुलाबी नाक,
देखे उसको हर कोई झाँक।।

पहन रखी थी लाल चुनरिया,
प्यारी–सी वो बनी दुलरिया।
रसोई में जा घुसी छुपाकर,
दूध मलाई चखी लजाकर।।

आ गई अम्मा लेकर झाड़ू,
चुहिया भागी बोली 'भागूँ।'
दीवारों में सुराख बनाई,
बाहर आई फिर मस्ती छाई।।

बच्चे बोलें–देखो देखो,
चुहिया रानी आई देखो!
हम देंगे ताजी रोटी,
मक्खन, गुड़ और मीठी मोटी।।

चुहिया बोली– ''ठीक है भैया,
पर मत लाना कोई छैय्या।
मैं नाचूँगी, गाऊँगी गीत,
पर मत करना कोई भी चीट।।''

बच्चों ने फिर जाल बिछाया,
रोटी संग गुड़ भी दिखलाया।
चुहिया बोली– ''प्रेम दिखाओ,
पर मेरा भय दूर हटाओ।।''

नन्हें मन की भोली भाषा,
सच्चे प्यार में बसी आशा।
चुहिया रानी मित्र बन गई,
हर आँगन की शान बन गई।।

– हिसार
(हरियाणा)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन	२०८२	वर्ष	४६
फरवरी	२०२६	अंक	८

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३१

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

अब आप अपनी वार्षिक परीक्षाएँ दे रहे होंगे या इनकी तैयारी में जुटे होंगे। इस समय प्राय: प्रत्येक औसत विद्यार्थियों को लगता है कि वे पढ़ते तो बहुत हैं, लेकिन याद नहीं रहता। यह समस्या विद्यालयीन कक्षाओं के बाद भी पीछा नहीं छोड़ती। प्रतियोगिता परीक्षाओं में तो असीम जानकारी स्मरण रखकर, निश्चित समय में, अचूक उत्तर देना होते हैं तब ही सफलता की संभावनाएँ प्रबल हो पाती हैं। अनेक बार कई विद्यार्थी अनुभव करने लगते हैं कि हमारे सपनों की आवश्यकता अनुसार, हमारी क्षमता कम पड़ती जा रही है। फिर उसे बढ़ाने के लिए पढ़ाई का अलग कमरा मिल जाए या माँ बादाम आदि के पौष्टिक लड्डू खिलाए, ट्यूशन, कोचिंग आदि बाहरी उपाय भी कर लें पर परीक्षा कक्ष में कई बार छत ताकना या सिर पकड़ लेना पड़ता है कि कुछ याद ही नहीं आ रहा है। याद किया था, परीक्षा कक्ष छोड़ते ही याद आ जाता है, पर जब लिखना था तब तो याद नहीं आया न?

आइए, अब समस्या को दूसरे छोर से देखते हैं। इन दिनों एक नाम बहुत चर्चा में है। महाराष्ट्र के अहिल्यानगर के १९ वर्षीय नवयुवक श्री. देवव्रत महेश रेखे। ये प्रसिद्ध हो रहे हैं अपनी असाधारण स्मृति क्षमता के कारण। काशी में विशेषज्ञ विद्वानों के बीच उन्होंने ५० दिनों में २००० वेदमंत्रों का त्रुटि रहित दण्डक्रम पारायण किया। बगैर पोथी देखे और यह सामान्य पाठ नहीं था, दण्डक्रम में एक ही मंत्र के अक्षरों को कई प्रकार से उलट-पुलट बोलना होता है।

जैसे आजकल कठिन विषय न हो तो एक मुहावरा कहा जाता है कि यह कौनसा रॉकेट साईंस है? अर्थात् कौनसा बहुत कठिन है? पहले ऐसे काम के लिए कहा जाता था ''कौनसा वेद पढ़ना है?'' भावार्थ वही है कि वेद पढ़ना बहुत कठिन काम होता है क्योंकि रॉकेट साईंस में भी वेदपाठ की तरह थोड़ीसी भी चूक, भूल, त्रुटि स्वीकार्य नहीं होती।

भैया बहिनो! यह आपसे इसलिए बता रहा हूँ कि समस्या भी आपकी है और चुनौती भी आपको ही। एकाग्रता और संयम तथा सतत् स्वाध्याय से आप भी कुछ असाधारण उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं यह असंभव नहीं। आपकी लगन आपमें छुपी असाधारण क्षमताओं को जाग्रत कर सकती है।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- उत्तर जाओ उत्तर पाओ -समीर गांगुली ०५
- समय यात्रा -रंजना मिश्रा २२
- मेरा प्रिय मित्र -इन्दिरा त्रिवेदी ४०
- सुधर गया मयंक -डॉ. अल्का जैन 'आराधना' ४४

छोटी कहानी

- नए विज्ञान शिक्षक -गोपालशरण शर्मा ४३

आलेख

- आस्था सौंदर्य और..... -विभा कनन २४

लघुआलेख

- मीठी रसभरी जलेबी -मुग्धा १०

संस्मरण

- मेरी जन्मभूमि तो..... -शैवाल सत्यार्थी १६

अनुवाद

- भाप बनी मोती -पुष्पा अंताणी १८

स्मरण

- बच्चों-किशोरों के..... -सूर्यकांत शर्मा २०

लघुकथा

- पैरों के निशान -मीरा जैन ३०

कविता

- चुहिया रानी -प्रियंका सौरभ ०२
- चीं ची-चूं चूं -टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला' ३७
- धूप -रामगोपाल राही ५१
- सर्दी की धूप -दिनेश विजयवर्गीय ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १२
- छः अँगुल मुस्कान - २६
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल २८
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ३२
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३३
- पुस्तक परिचय - ४७
- आपकी पाती - ४९

संस्थान विशेष

- बीरबल साहनी पुरा वनस्पतिक विज्ञान संस्थान -डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे ३८

बौद्धिक क्रीडा

- बताओ जरा -देवांशु वत्स १७
- भूल-भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी २१
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी ३१
- गीत पहेली -डॉ. वेदप्रकाश अग्निहोत्री ४६
- बाल विज्ञान पहेलियाँ -डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी ४६
- एक सवाल -संकेत गोस्वामी ५०

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका के .... -देवांशु वत्स २७
- सौर तूफान -संकेत गोस्वामी ३४

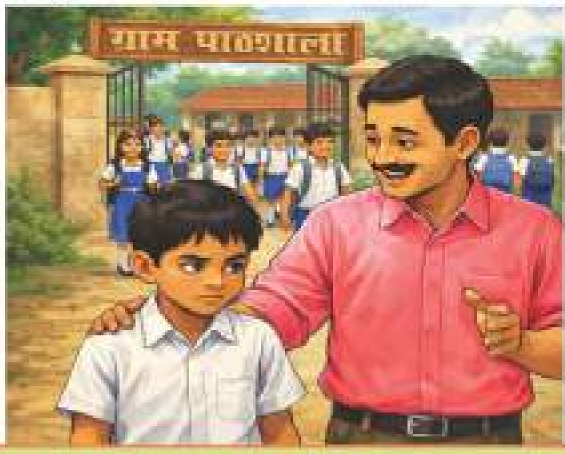

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएं।
विवरण इस प्रकार है - खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

उत्तर जाओ, उत्तर पाओ

– समीर गांगुली

जंगल। बहुत बड़ा। बहुत घना। और सुनसान। इतना सन्नाटा कि मच्छर भी गाता था तो पोखरे से निकल कर मेंढक कहता था– ''अरे भाई! चुप हो जा, शोर न मचा, सोने दे।''

उसी जंगल में था एक अद्भुत पेड़। हजार वर्ष पुराना। उसके पत्ते भी थे अद्भुत। आधे पीले और आधे लाल।

कहते हैं वह पेड़ बारह वर्ष में एक बार बोलता था और जो उसे सुन लेता था, उसका भाग्य बदल जाता था। उसे उसका लक्ष्य प्राप्त हो जाता था।

किन्तु कोई भी यह नहीं जानता था। कि बारह वर्ष का वह समय कब से प्रारंभ होकर कब पूरा होता था। इसलिए दूर-दूर के जीव-जन्तु उस पेड़ के नीचे डेरा जमाए रखते थे। पेड़ के बोलने की प्रतीक्षा करते थे। फिर निराश होकर चल देते थे।

किन्तु उस रात को, जब आसमान में पूरा चाँद खिला था और जंगल में पूरा सन्नाटा छाया था, वह अद्भुत पेड़ बोला।

उस समय पेड़ के नीचे चार जीव उपस्थित थे। एक जुगनू जो हवा में था। एक कौआ जो पेड़ की डाली पर था। एक चूहा जो पेड़ के तने की कोटर में था और उसे थोड़ा-थोड़ा कुतर रहा था। और एक हिरण, जिसका एक सींग टूटा था और वह पेड़ के नीचे बैठा-बैठा हाँफ रहा था, क्योंकि वह एक बाघ से जान बचाकर वहाँ पहुँचा था।

तो उस दिन, नहीं उस रात पेड़ बोला। चूहा बिल से बाहर आया और जोर से चिल्लाकर बोला, ''किसी ने कुछ सुना क्या? पेड़ कुछ बोला है। क्या बोला, कोई बताए तो मैं जानूँ कि मैंने भी वही सुना है जो पेड़ बोला है।''

जुगनू सबसे पहले बोला, ''मैंने सुना है, लेकिन पल्ले कुछ नहीं पड़ा। इसका क्या मतलब है– उधर जाओ, उधार पाओ।''

यह सुनकर चूहा और हिरण दोनों हँस दिए, फिर पहले हिरण बोला, ''अरे! उतावले जुगनू! तुमने गलत सुना है। पेड़ बोला है– उत्तर जाओ....

और कौवे ने बात पूरी करते हुए कहा– ''उत्तर पाओ।''

बेशक यही कहा था पेड़ ने 'उत्तर जाओ, उत्तर पाओ' और इस बात में पूरा अर्थ था। चारों जीव ने सहमति में सिर हिलाया, फिर एक दूसरे की ओर देखने लगे।

कौआ बोला, ''एक से भले चार। यही है अपना विचार।''

हिरण ने कहा– ''हाँ, हम चारों को साथ मिलकर चलना चाहिए, उत्तर दिशा में।''

चूहा उछलकर एक पत्थर पर जा खड़ा हुआ और बोला– ''भले ही हमारी मंजिल अलग–अलग हो, लेकिन शुरुआत तो साथ–साथ ही करनी चाहिए। उत्तर दिशा है मेरे बाईं मूँछ की दिशा।''

जुगनू जो अब तक गलत सुनने के लिए शर्मिंदा था, अब धीरे से बोला– ''तो भाइयो! हमें अभी शुरुआत कर देनी चाहिए। मैं सबको रास्ता दिखाता रहूँगा, जब तक अँधेरा नहीं छँटता।''

और फिर ये चारों निकल पड़े उत्तर दिशा में। अपनी मंजिल की तलाश में। अपनी जिन्दगी को बदलने के लिए। क्योंकि चारों ही किसी न किसी कारण से दुखी थे और अपनी जिन्दगी को बदलना चाहते थे।

जुगनू आगे–आगे उड़ने लगा। और उसकी रोशनी की राह में वे तीनों आगे बढ़ने लगे।

वे चलते गए। आगे बढ़ते गए। जंगल–जंगल। रात समाप्त हुई, दिन निकला। फिर दिन बीता, रात आई। थोड़ा आराम किया, थोड़ा खाया–पिया और फिर आगे चलते गए। तीन दिन बाद उन्हें नजर आया। आग का झरना। एक पहाड़ी से लाल लावा नीचे बह रहा था। नीचे धुआँ ही धुआँ हो रहा था और पास जाकर उन्होंने देखा कि ये लावा एक तालाब को भर रहा था।

इससे पहले कि उन चारों को कुछ समझ आता। एक काला लंबा जीव जिसका चेहरा देखकर पता लगाना कठिना था कि वह मनुष्य है या दैत्य, उनके सामने आया बोला– ''यदि रक्षा कवच चाहते हो तो यहाँ रुक सकते हो, वरना आगे बढ़ जाओ।''

यह सुन हिरण आगे आया और बोला– ''रक्षा कवच क्या है, समझाओ और उसे पाने के लिए मुझे क्या देना होगा?''

काला जीव हँसा और बोला– ''मैं तुम्हारी जमड़ी को लोहे सा मजबूत बना दूँगा और टूटे सींग को भी ठीक कर दूँगा। फिर तुम बिना डर के जी सकोगे। किसी से डरने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बाघ या शेर जो भी तुम्हारी चमड़ी पर दाँत गड़ाएगा, उसके दाँत टूट जाएँगे।''

हिरण की जैसे मनमानी इच्छा पूर्ण हो गई। वह प्रसन्न होकर बोला– ''डर से मुक्ति पाने, चैन से जी पाने के लिए मुझे कोई भी मूल्य देना स्वीकार है। मैं यहीं रुकता हूँ। साथियो! तुम आगे जाओ।''

काला जीव सिर हिलाकर बोला– ''अच्छी बात है। तुम यहीं रुक जाओ। तुम्हारी नई चमड़ी, लोहे के नए सींग बनाने में कुछ समय लगेगा। लेकिन इसके

बदले में तुम्हें अपने से कमजोर जीवों की रक्षा का वचन देना होगा।''

इसके बाद ये तीनों आगे बढ़ गए। पहाड़ी पार की। मैदान आया। उसे भी पार किया। दिन-रात पार किए और तीन दिन बाद जा पहुँचे एक ऐसी दुनिया में इतना दाना-पानी और तरह-तरह का खाना था कि चूहा मस्ती से उछलने लगा।

तभी एक बहुत मोटा और थुलथुल शरीर वाला जीव चलते-लुढ़कते हुए आया और बोला- ''कोई कमी नहीं यहाँ, खाओ-पीयो, मजा करो। कोई सवाल नहीं। कोई दोषारोपण नहीं। कोई काम नहीं। सौदा पसंद है तो रुक जाओ, नहीं तो आगे बढ़ने नजर आओ।''

चूहे को यही तो चाहिए था। भरपेट खाना और स्वादिष्ट खाना। उसने चारों तरफ देखा। फल-अनाज-तरकारियाँ। इतनी सारी चीजें देख वह अपने को रोक नहीं पाया और दौड़ कर खाने पर टूट पड़ा।

यह देख थुलथुल शरीर वाला जीव जुगनू और कौवे से बोला- ''चूहे को तो अपनी मंजिल मिल गई अब तुम दोनों आगे जाओ और तलाशो कि तुम्हें क्या चाहिए।''

जुगनू और कौवा आगे चल दिए। चलते-चलते अब वे यह भी सोचने लगे थे कि वास्तव में उन्हें क्या चाहिए? वे क्या पाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। और यह जान-पाना आसान नहीं था। किसी के लिए भी आसान नहीं है कि उसे जीवन में क्या मिल जाए तो किसी और चीज की चाह नहीं रहेगी।

जुगनू और कौवा अब सोचते-सोचते आगे बढ़ रहे थे। अब जंगल रूप बदल रहा था। हालाँकि दोनों ही हवा में यात्रा कर रहे थे फिर भी ऐसा लग रहा था कि जंगल अब एक भूल-भुलैया की तरह उन्हें उलझा रहा था। उन्हें यह पता लगाने में कठिनाई हो रही थी कि वे आगे बढ़ रहे हैं या पीछे लौट रहे हैं या फिर एक ही स्थान पर गोल-गोल चक्कर लगा रहे हैं। इसी भ्रम में चलते-ठहरते, सोते-जागते कई दिन बीत गए। और फिर वे एक गुफा को पार कर ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ सैकड़ों रंग के गुब्बारे हवा में लटक रहे थे। यह दृश्य उनकी कल्पना से बाहर था। इसलिए वे भौंचक्के से ऊपर देखते रह गए। तब तक जब तक कि एक लंबे -पतले और बहुरंगी पंखों वाले जीव ने आकर उन्हें प्रणाम नहीं किया।

यह जीव पहले मिले दो जीवों की तुलना में उन्हें विनम्र और दोस्ताना लगा।

उसने उन दोनों का स्वागत करते हुए कहा-

''यह आपकी यात्रा का अंतिम पड़ाव है। यदि आप अभी तक उलझन में हैं कि आपको क्या चाहिए तो मैं बताता हूँ कि आपको रंग चाहिए। यह रंगपुरी है। हम यहाँ आने वाले हर प्राणी को उसके मनचाहे रंग में रंग देते हैं। बाहर से अंदर से भी। क्यों, कौवे भाई? तुम तो सदा उदास रहते होगे अपने इस भयानक काले रंग के कारण?''

कौवे ने उस बहुरंगी जीव की बात ध्यान से सुनी और सोचने लगा कि क्या कभी उसने अपने काले रंग के बारे में इतना बुरा सोचा है? क्या काले रंग के होने के कारण वह कभी दुखी हुआ है? वह बहुत याद करके भी ऐसा कुछ याद नहीं कर पाया।

और इससे आगे सोचने का उस बहुरंगी जीव ने उसे अवसर ही नहीं दिया। वह बोला– ''कौवे भाई! मैं तुम्हारा कायाकल्प कर दूँगा। चलो, पहले मैं तुम्हें दिखाता हूँ तुम नए रूप में कैसे दिखोगे। और एक नहीं अनगिनत नमूने दिखाऊँगा मैं। जो पसंद आए, उसी में अपने को बदल लेना। मेरा वादा है, नए रूप के साथ तुम्हारी दुनिया बदल जाएगी। तुम्हारी जिन्दगी बदल जाएगी।''

इतना कहकर उस बहुरंगी जीव ने अपने हाथों को हवा में लहराया। साथ ही हवा में ठीक उस कौवे जैसा एक कौवा प्रकट हुआ। वह पंख समेटे हवा में लटका या अटका जैसा था। फिर बहुरंगी जीव ने एक अँगुली हिलानी प्रारंभ की। उसके साथ ही कौवे की चोंच सफेद हो गयी। जो कि जीवन के कौवे को पसंद नहीं आयी। सफेद चोंच को साफ रखना एक मुसीबत का काम है। फिर बहुरंगी जीव ने अपनी अँगुली को और हिलाना प्रारंभ किया। उसके साथ–साथ कौवे का रंग सफेद होना शुरू हो गया। पल भर में हवा वाला कौवा आधा सफेद और आधा काला था। निराला था किन्तु अजीब–सा। सो जमीन वाले कौवे को वह कतई पसंद नहीं आया।

फिर देखते ही देखते पूरा कौवा सफेद हो गया। दूध जैसा सफेद या बर्फ जैसा सफेद। यह बेहतर तो था लेकिन इस रूप में तो वह रंगा हुआ कौवा ही कहलाता, इसलिए कौवे को यह भी पसंद नहीं आया।

लेकिन इस बीच बहुरंगी जीव ने एक बार भी जमीन पर खड़े कौवे की तरह नहीं देखा। अभी तो उसका खेल शुरू ही नहीं हुआ था। इस बार बहुरंगी जीव ने अपने दोनों हाथों को हवा में लहराया। हथेलियों को फैलाया और अँगुलियों को आकाश की तरफ उठाया। अब एक चमत्कार हुआ। हाँ, चमत्कार। हवा में चार कौवे नजर आए। पंख फैलाए। बहुरंगी जीव की अँगुलियों से रंग की लकीरें निकल रही थीं और वे उन कौवों के शरीर को रंग रही थी। देखते ही देखते आसमान में चार रंगबिरंगे और बहुत ही सुंदर पक्षी पंख पसारे जमीन के कौवे और जुगनू का स्वागत कर रहे थे। कौवे ने कभी भी अपने ऐसे रूप की कल्पना नहीं की थी। चोंच से लेकर पैर तक सुंदर। रंग–बिरंगे पंखों का तो कहना ही क्या। लेकिन अब उसे अपने चार रूपों में से एक को चुनना था। कुछ उलझन हुई, लेकिन फिर उनमें से एक रूप के लिए

उसने सहमति दी। बहुरंगी जीव प्रसन्न हुआ।

बोला– ''मित्र! तुम्हारा निर्णय बहुत सही है। रूप के साथ सभी कुछ अपने आप मिल जाता है। अब देखना तुम्हारा जीवन कितना सम्मान जनक होगा। अब तुम्हारी वाणी में भी सभी को मधुरता का अनुभव होगा। जाओ, उस वृक्ष की छाँव में बैठ जाओ, मैं जुगनू भाई को समाधान देकर आता हूँ।''

लेकिन तब तक जुगनू आगे बढ़ चुका था। बहुरंगी जीव ने पीछे से आवाज देकर उसे रोका, ''अरे आगे मत जाओ। आगे चिर अँधेरा है। दुःख का जंगल है। वहाँ कष्ट है, क्लेष है, निराशा है। वहाँ जाओगे तो पछताओगे।''

लेकिन जुगनू को कोई अनजानी शक्ति आगे जाने की प्रेरणा दे रही थी। वह आगे बढ़ता ही गया, तब तक जब तक कि अँधेरे का जंगल शुरू नहीं हो गया। यहाँ बारिश थी। ठंडी बर्फीली हवाएँ थीं। और थी एक सड़ांध।

जुगनू का हवा में उड़ते–उड़ते जी घबराने लगा। जी चाहा, वहाँ से जल्दी से निकल जाए। नीचे देखा तो कुछ हलचल–सी अनुभव हुई। वह थोड़ा और नीचे आ गया। अपनी रोशनी से कुछ देखना चाहा। फिर उसने देखा कि जमीन पर बाघ, हाथी, जिराफ जैसे कई विशाल जीव बेजान से पड़े कराह रहे हैं।

उन पर जुगनू की रोशनी पड़ी तो वे आँखें खोलकर उठने का प्रयत्न करने लगे। फिर एक बाघ किसी तरह उठकर बोला– ''जुगनू! मत जाओ। हमें उजाला दो। अँधेरे ने हमारा सब कुछ छीन लिया है। लेकिन तुम्हारा प्रकाश हमारे लिए एक आशा की किरण है। तुम यहीं रहो। हमें उजाला दो।''

जुगनू ने देखा कि उसकी रोशनी पाकर दूसरे जीव भी आँखें खोल रहे हैं और कराहना छोड़कर उठने की कोशिश कर रहे हैं। जुगनू को यह देख अच्छा लगा। वह और नीचे उतर आया, उनके बिलकुल करीब। अब काफी उजाला हो गया था। धीरे–धीरे अब सब जीव उठ रहे थे।

फिर सबने एक स्वर में कहा, ''जुगनू! तुम यहीं रह जाओ। हमें तुम्हारी आवश्यकता है। हमें उजाला चाहिए। जीने के लिए आशा चाहिए।'' लेकिन जुगनू को लग रहा था कि यह उसकी मंजिल नहीं है, उसे और आगे जाने के लिए कोई पुकार रहा है। वह विनम्रता से बोला– ''क्षमा करना, मैं अभी रुक नहीं सकता। लेकिन तुम्हें भी निराश नहीं करूँगा। मैं अपनी आधी रोशनी को यहीं छोड़े जा रहा हूँ।''

यह कहकर उसने अपने रोशनी वाले अंग के आधे भाग को अपने से अलग कर दिया। वह भाग नीचे जाते ही और तेज उजाले से चमकने लगा। वहाँ के अंधकार को दूर करने लगा। इसे करने में जुगनू को कष्ट तो बहुत हुआ। लेकिन उसने किया और बाघों, हाथियों, जिराफों तथा अन्य जीवों को खुशी से खड़े होते देखते हुए आगे बढ़ गया।

आगे थी बर्फीली दुनिया। बर्फीले तूफान का शोर और दर्दनाक चीखें। जैसे कोई हंटर से किसी को पीट रहा हो, लेकिन जुगनू किसी को देख नहीं पाया। क्योंकि बर्फ के टुकड़े उसके शरीर पर चाकू–तीर की तरह चुभ रहे थे। उसने हिम्मत नहीं हारी। आगे बढ़ता गया। अपनी पूरी से जगमगाने की कोशिश करने लगा। ताकि इस बर्फीली दुनिया का कण–कण जगमगा उठे। ऊर्जा और उष्मा से भर उठे।

लेकिन नन्हा सा जुगनू बेरहम बर्फीले तूफान का कब तक मुकाबला करता। आखिरकार धप्प से नीचे गिर गया। फिर उसने देखा, उसके सामने एक बहुत ही बुढ़िया बैठी है। उसने जुगनू को अपनी हथेली में उठा लिया। हालाँकि वह बुढ़िया स्वयं बर्फ की बनी थी, लेकिन उसके हाथ में गर्माहट थी।

बर्फीली बुढ़िया उसकी तरफ प्यार से देखते हुए बोली– ''बड़े जिद्दी निकले तुम तो! मिल गया तुम्हें अपना उत्तर?''

जुगनू बोला- ''पता नहीं, लेकिन स्वयं को आधा खोकर मुझे बहुत हल्का लग रहा है। मैं सोच रहा हूँ यदि अवसर मिले तो मैं अपनी रोशनी का बाकी आधा भाग भी छोड़ने को तैयार हूँ।''

बर्फीली बुढ़िया एक बार फिर से हँसी और बोली- ''उत्तर की तलाश ही उत्तर है। उत्तर किसी मंजिल का नाम नहीं है। तुम जितना आगे बढ़ोगे, दूसरों के दु:ख-दर्द को जितना समझोगे, अपनी चाहत, कमी या इच्छा उतनी ही कम लगेगी। और प्यारे जुगनू तुमने इस बात को खूब समझ लिया है। जाओ तुम्हारा बहुत काम बाकी है। तुम जहाँ भी जाओगे, आशा का प्रकाश फैलाओगे। और देखना तुम्हारी यह रोशनी उतनी ही बढ़ती जाएगी, जितना तुम इसे बाँटोगे।'' यह कहकर बर्फीली बुढ़िया ने जुगनू को अपनी हथेली से उड़ा दिया। अब यह वापसी की यात्रा थी। एक उद्देश्य के साथ।

अचानक उसने अपने पीछे तेज रोशनी अनुभव की। पीछे मुड़कर देखा तो चौंक गया। उसके शरीर से असंख्य जुगनू निकल रहे थे। हजारों-हजार। सारा आकाश, सारी धरती अब रोशनी से नहा उठी थी। वह अद्भुत गर्माहट अनुभव कर रहा था। अब वह अकेला जुगनू नहीं रह गया था। वह आधा अंग गँवाकर भी असंख्य प्रकाश पुंजों का समूह बन गया था। वह लाखों जुगनुओं में बदल गया था।

वह जहाँ-जहाँ से गुजर रहा था, वहाँ से अँधेरा दूर हो रहा था। जीवन में आशा का संचार हो रहा था। हर जीव जुगनुओं से ऊर्जा ले रहा था। यह रंग-बिरंगे कौवे ने देखा, पेटू चूहे ने देखा, भयभीत रहने वाले हिरण ने भी देखा और उनकी समझ में आ गया कि असली लक्ष्य तो जुगनू ने ही पाया है।

- मुंबई (महाराष्ट्र)

लघु आलेख

मीठी रसभरी जलेबी

- मुग्धा

जलेबी एक ऐसी मिठाई हैं जिसकी चर्चा मात्रा से मुँह में पानी आ जाता है। यह भारत समेत कई अन्य देशों में लोकप्रिय मिठाई हैं। भारत में जब भी स्वादिष्ट मिठाइयों का उल्लेख होता है तो उसमें जलेबी का नाम अवश्य आता है। जलेबी न केवल देखने में सुंदर दिखती हैं बल्कि चीनी की चाशनी में डुबोकर ही बनाई जाती हैं। यही कारण है कि कई बार लोग जलेबी को रसभरी ही समझ लेते हैं। जलेबी अपने स्वाद के कारण से मिठाइयों में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं और खाने वालों को अपना दीवाना बना देती हैं।

जलेबी का इतिहास

जलेबी भारत की सबसे लोकप्रिय मिठाइयों में से एक है। जलेबी भारत के साथ-साथ पाकिस्तान, ईरान और मध्यपूर्व एशिया में भी खूब लोकप्रिय है। जलेबी खमीरयुक्त मैदे के घोल से गोल-गोल या अनियमित आकार में घी में तल कर बनाया जाता है जिसे बाद में चीनी की चाशनी में डुबोकर तैयार किया जाता है। यह अत्यंत ही स्वादिष्ट मिठाई है जिसे गर्म-गर्म खाने का आनंद ही कुछ और है। जलेबी की उत्पत्ति के संबंध में कई मत है। जलेबी जिसे अरबी में जलाबिया या फारसी में जुलबीआ कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति के संबंध में मध्यपूर्ण एशिया दावेदारी प्रस्तुत करता है। और हो भी क्यों नहीं मध्यकालीन एक किताब 'किताब-अल-तबीज' में जलाबिया नामक एक मिठाई का वर्णन मिलता है जो इस दावे की पुष्टि करता है। आज भी ईरान में 'जुलाबिया' नामक किताब में इसे बनाने की कई विधियों का वर्णन मिलता है।

वैसे जलेबी बनाने की विधियों का वर्णन भारत की पुस्तकों में भी मिला है। सत्रहवीं शताब्दी की पुस्तक भोजन कुतूहला और संस्कृत पुस्तक

गुण्यगुणबोधनी में इसे देखा जा सकता है। शरदचंद्र पेंढारकर ने इसे कुण्डलिका कहा है। जलेबी के कई नाम मिलते हैं। प्राचीन नामों की बात करें तो कुण्डलिका और जल वल्लिका का वर्णन तो प्राचीन पुस्तकों में मिलता है।

जलेबी नाम क्यों पड़ा ?

कदाचित मीठे जल से परिपूर्ण होने के कारण से यह जलेबी हो गया हो या फिर जलाबिया या जुलबिया ही बदलते-बदलते जलेबी हो गया हो। भारत और पाकिस्तान में इसे जलेबी कहा जाता है। महाराष्ट्र में इसे ही जिलेबी या जिलबी कहा जाता है नेपाल में जेरी जबकि बंगाल में इसे जिलपी बोला जाता है।

क्या है चोटहिया जलेबी

उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ भागों में एक प्रकार की और जलेबी मिलती है जिसे चोटहिया जलेबी कहा जाता है। इस जलेबी में विशेषता यह होती है कि इसमें चीनी की चाशनी के स्थान पर गुड़ की चाशनी का प्रयोग होता है। गुड़ के कारण से जलेबी में एक अलग ही सोंधी-सोंधी सुगंध आ जाते हैं। विदेशी पर्यटक जब भारत आते हैं तो जलेबी खाकर बहुत प्रसन्न होते हैं क्योंकि इसकी मिठास मन और मस्तिष्क दोनों को चरम आनंद की अनुभूति देती है। इसमें रंग लाने के लिए केसर का प्रयोग होता है।

जलेबी परपु भी कहा जाता है। दक्षिण के राज्यों में तो इसे झांगरी कहा जाता है। जलेबी की शुरुआत मध्यपूर्व के देशों से विशेषकर ईरान से माना जाता है। जलेबी मैदे के घोल से बनाई जाती है। जलेबी को बनाने के लिए मैदे में खमीर का उठना आवश्यक माना जाता है तब ही वह स्वाद देती है।

जलेबी का आकार गोल लच्छेदार होता है, अधिकतर जलेबी कड़क और करारी होती है वहीं हैदराबाद की जलेबी नर्म और खुशबूदार होती है।

जलेबी का स्वाद गर्म-गर्म खाने में है जबकि कुछ लोग इसे ठंडे दही में डालकर इसके स्वाद का आनंद लेते हैं। जलेबी को सुबह या शाम को नाश्ते के साथ अधिकतर खाया जाता है। मध्य प्रदेश के इन्दौर की पोहा जलेबी सारी दुनिया में प्रसिद्ध है।

- नई दिल्ली

चक्रधर नलिन : बाल साहित्य के लेखक और इतिहासकार

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

चक्रधर नलिन

चक्रधर नलिन बाल साहित्य की प्रमुख विधाओं के रचनाकार थे। उन्होंने बाल साहित्य पर विवरणात्मक आलेख भी खूब लिखे। बाल साहित्य के इतिहास लेखन में उनका विशेष समर्पण था। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों के साथ–साथ वैज्ञानिक चेतना भी देखी जा सकती है।

१९ जुलाई १९३९ को अटोरा बुजुर्ग, रायबरेली में रामेश्वर द्विवेदी और शीतला देवी की संतान के रूप में हुआ था। उनकी प्रथम रचना 'गीत गाता जा रहा है' १९५४ में जागरण (झाँसी) में प्रकाशित हुई थी।

वे पेशे से वकील थे लेकिन सही अर्थों में आजन्म बालकों के हितों और बाल साहित्य की वकालत करते रहे। बच्चों के लिए लिखी उनकी कहानियाँ, कविताएँ और नाटक जीवन के उदात्त मूल्यों से संपृक्त हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति भी है और वैज्ञानिक चेतना भी। उनकी चर्चित पुस्तकें हैं– 'नन्ही चिड़िया फुदक रही', 'सूर्य निकलने वाला है', 'बच्चे देश महान के', 'बाल ग्राम गीत', 'अच्छे मार्ग चले जीवन', 'अंतरिक्ष में जाने वाले हम', 'खुशियों के गीत', 'आओ बच्चो गाएं गीत', 'झइयन नाना', 'बच्चे नहीं रुकेंगे', 'टिम टिम तारे', 'वन का फूल', 'देशभक्ति के गान', 'बाल कवितांजलि (बाल काव्य), 'सोने का पिंजड़ा', 'नीला घोड़ा', 'सोने की वर्षा', 'फूल माला' 'देश के लिए', 'बलिदान का पथ', 'जंगल की प्यास', 'नदी का संदेश (बाल कथाएँ)', 'आजादी की पुकार', 'देश भक्त आजाद', 'सबसे सुंदर फूल', 'रघुकुल का दीपक', 'सत्य का पुजारी', 'महकता बचपन', 'महामानव की विजय', 'अंधा कवि', 'जय हनुमान (बाल नाटक)', 'उत्तर प्रदेश की विभूतियाँ', 'हमारे प्रेरणास्रोत', 'भारत के हरिजन संत', 'आजादी के उपासक'। महात्मा बुद्ध पर चरित्र उनका बाल खंड काव्य 'अच्छे मार्ग चलें' किशोरों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। बाल साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने बड़ों के लिए भी खूब लिखा।

विचार वाणी उनके निबंधों का संकलन है, जिसमें बालसाहित्य पर भी समालोचनात्मक आलेख संकलित हैं। नलिन जी पत्र–पत्रिकाओं में नियमित रूप से गवेषणात्मक आलेख लिखते रहे। उन्होंने महावाणी वार्षिकी का संपादन भी किया।

वे प्रखर वक्ता थे। बाल साहित्य के मर्मज्ञ और विश्लेषक थे। जिन दिनों बाल साहित्य में गिनती के समीक्षक थे। तब उनकी सक्रियता और समर्पण देखते ही बनता था। चक्रधर 'नलिन' बाल साहित्य के तत्वाभिनिवेशी आलोचक थे। उन्होंने अपने

आलेखों में बाल साहित्य का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया। इसका एक कारण यह भी है कि वे एक आलोचक से पहले रचनाधर्मी थे। कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, निबंध इत्यादि विभिन्न विधाओं में उन्होंने प्रभूत सृजन किया। इन सभी विधाओं में वे पत्र–पत्रिकाओं में वे नियमपूर्वक लिखते रहे।

नलिन जी निष्पक्ष भाव बालसाहित्य के विविध पक्षों पर गम्भीर लेखन करते रहे। वे बालसाहित्य की रग–रग से वाकिफ थे और सभी रचानाकारों से परिचित भी। उनके आलेखों में विषय की गहराई, चिन्तन, अन्वेषणात्मक दृष्टि और सहज विवेचन देखने को मिलता है। उन्होंने बाल साहित्य को सुस्थापित करने के लिए अथक परिश्रम किया। नलिनजी के बहुत से आलेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में बिखरे पड़े हैं। इनके संकलन और सम्पादन की आवश्यकता है। समय–समय पर उन्होंने बाल साहित्य की अनेक महत्वपूर्ण कृतियों की समीक्षा भी प्रस्तुत की।

जीवन के अंतिम दिनों में वे बाल साहित्य लेखकों पर एक पुस्तक तैयार करने में लगे थे, जिसका प्रकाशन नहीं हो सका। बालकों के लिए रचित उनकी ढेरों कविताएँ विज्ञानपरक हैं। उनकी अनेक कविताओं में कथारस भी है और हास्य भी। नलिनजी जैसे समर्पित लेखक अनुसंधान के सच्चे हकदार हैं। उनके समग्र लेखन पर शोध करने की दिशा में शोधार्थियों को आगे आना चाहिए।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने उन्हें बाल साहित्य इतिहास लेखन सम्मान से विभूषित किया था। ७ जनवरी २०१९ को लखनऊ में उनका निधन हो गया। वे 'देवपुत्र गौरव सम्मान' से भी विभूषित हुए। लोग उनके काम को जाने, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आइए, उनकी कुछ पठनीय बाल कविताओं का रसास्वादन करते हैं–

कविता

प्यारी लगती धूप

जाड़ा आया प्यारी लगती धूप है।
रात बड़ी, दिन छोटे इसका रूप है।
ठंडी हवा कंपाती थर, थर,
पाला पड़ता अंजुलि भर, भर,
बैठे आग तापते घर–घर
ओस घास पर, धुआँ उठ रहा कूप है।
जाड़ा आया प्यारी लगती धूप है।
गेंदे खिले, गुलाब महकते,
कपड़े मोटे गर्म पहनते,
लदे फलों से बाग महकते
स्वस्थ बनाता हर मौसम का भूप है।
जाड़ा आया, प्यारी लगती धूप है।

आइसक्रीम

आइसक्रीम आइसक्रीम!
ठंडी लगती आइसक्रीम,
दूध-मलाई आइसक्रीम,
मजेदार, सच, आइसक्रीम,
अच्छी-अच्छी आइसक्रीम,
रंग-बिरंगी आइक्रीम,
प्यारी-प्यारी आइसक्रीम,
खाते हैं सब आइसक्रीम,
अम्मा, ला दो आइसक्रीम,
आइसक्रीम, आइसक्रीम

मंगल ग्रह को जाऊँगी

माँ, नभ देखो बुला रहा
मैं मंगल ग्रह को जाऊँगा,
शटल यान से उतर, वहाँ पर
गीत खुशी के गाऊँगा।
शुष्क और वीरान भूमि
उज्ज्वल हिम-पानी है,
वहाँ न वर्षा, नदिया, झरने,
मिट्टी रेगिस्तानी है।
दिन के घंटे हैं चौबीस,
वहाँ न जल की धाराएँ
है लुभावनी धरती उसकी
नव जीवन की आशाएँ।
वहाँ पहुँचकर सुंदर-सा घर
अपना एक बनाऊँगा!
धीरे-धीरे पृथ्वीवासी
उस ग्रह आएँ-जाएँगे,
छिपे रहस्य सौर मंडल के
नई खोज कर पाएँगे
हरे-भरे हँसते फूलों के
पौधे वहाँ लगाएँगे,
हम पड़ोसियों के मुख से
'मंगल रिटर्न' कहलाएँगे।
लोक, लोक में जा-जाकर के
अपना ध्वज फहराऊँगा!

कामना

सोच रहा हूँ घने अँधेरे
में एक दीप जलाऊँ।
भूले-भटके राहगीर को
उसकी राह दिखाऊँ।
इन नन्हें हाथों से कर दूँ
कोई बड़ा कमाल।
हँसी खुशी से देते आएँ
इसकी लोक मिसाल।
जिनकी आँखों में आँसू हैं
उनकी मैं मुस्कान बनूँ।
जो स्वदेश का धनुष उठाएँ
उनकी तीर-कमान बनूँ।
सपना बनूँ देश के सुख का
घर-घर की खुशहाली का,
कण-कण में प्रकाश फैलाऊँ
दीप बनूँ दीवाली का।

बम्मा दादा

बम्मा दादा आओ, चंदा मामा आओ।
नानी के घर आओ, नाना के घर आओ।
मामा के घर आओ, मामी के घर आओ।
केला, बिस्कुट लाओ, बम्मा दादा आओ।
बाबा के घर आओ, दादी के घर आओ।
चाचा के घर आओ, चाची के घर आओ।
हमको अच्छा पाओ, बम्मा दादा आओ।

नई कहानी

चलो सुनाओ नई कहानी
नानी ओ नानी।
कैसा चंदा, सूरज भैया,
कैसे तारे, धरती मैया,
हवा कहाँ से बहती रहती

कैसे बदल बरसे पानी।
नानी, ओ नानी चले कहानी

आसमान में कैसे चमकें
बिजली रानी।
नई कहानी चलो सुनाओ
नानी, ओ नानी।

कैसे सुबह, शाम होती है,
कैसे बंद आँख सोती हैं,
कैसे खिलते फूल-रंगीले
कैसे निर्झर जल के दानी।
नानी जी नानी, मुझे बताओ
क्यों बिल्ली जी, चूहे खानी।
नानी ओ नानी
चलो सुनाओ नई कहानी।

कैसे बिजली ताकत पाती,
कैसे सुबह उजाला लाती,
कैसे बीज पेड़ बन जाते
कैसे बोलूँ सागर-बानी।
नानी ओ नानी।

नया जमाना, छोड़ो अपनी
याद पुरानी
नई कहानी चलो सुनाओ
नानी ओ नानी।

मधुमक्खी

भिन-भिन उड़ी शहद की मक्खी,
उड़कर खूब मिठाई चक्खी
छत्ता बड़ा बनाती है यह,
फूलों से रस लाती है यह
पर जब डंक चुभाती है यह,
नानी याद दिलाती है यह

पौधे

पौधे कभी न होटल जाते,
अपना भोजन स्वयं बनाते।
मिट्टी, वायु, प्रकाश, सूर्य, जल
से अपना है काम चलाते।
अच्छे हरे, भरे पौधों से
हँसता मुस्काता अपना घर।
प्राण वायु हर पल देते हैं
जिस पर अपना जीवन-निर्भर।
लकड़ी से मकान बनते हैं,
मिलती ताजी शुद्ध दवाएँ।
मधुमय वातावरण बनाती
बहती छू जब नित्य हवाएँ।
इनके मीठे फल, फूलों से
हर प्राणी हैं भूख मिटाते।

इनसे हमको जीवन मिलता,
भूमि बाढ़ से सदा बचाते।
मूल्यवान इनकी लकड़ी है,
धंधे तरह-तरह के होते।
सुंदर फर्नीचर बनता है,
सुख के बीज बहुत से बोले।

- शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

मेरी जन्मभूमि तो यह भारत भूमि है

– शैवाल सत्यार्थी

क्रांति–योद्धा एवं मूर्धन्य साहित्यकार : डॉ. भगवानदास माहौर (जन्म : २७ फरवरी, १९१० – महाप्रयाण : १२ मार्च, १९७९)

भारत की सशस्त्र–क्रांति के महान सेनानी– चन्द्रशेखर आजाद तथा सरदार भगतसिंह के अभिन्न साथी–भगवानदास माहौर।

अचूक निशानेबाज.... इसी विश्वास पर, आजाद ने, भोजन के कटोरदान में पिस्तौल रखकर– जलगाँव की अदालत में भेजी– मुखबिर जयगोपाल और फणीन्द्र को, गोली से उड़ा देने के लिए..... किन्तु, निशाना चूक गया– बीच में आ गए इंसपेक्टर नानक शाह की जाँघ को चीरती गोली निकल गई... दूसरी गोली जयगोपाल के कंधे पर लगी। भगवानदास जी को आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। बहुत व्यथित स्वरों में उन्होंने कहा– 'एन मौके पर मैं, आजाद के विश्वास के विपरीत, निशाना चूक गया– न फाँसी पर चढ़ सका, न शहीद हो पाया।' 'भगतसिंह बहुत विनोदी स्वभाव के थे' – डॉ. माहौर ने बताया– 'मेरी चौड़ी–चपटी नाक और चौड़े ऊपरी होंठ देखकर, मेरा मजाक बनाया करते– 'डारविन की बात सत्य मालूम होती है: यह रही बन्दर और मनुष्य के बीच की खोई हुई कड़ी!' कितना अपनापन था, उस मजाक में। फाँसी के फन्दे पर झूलने तक आपस में ऐसे ही विनोद चला करते थे... जय क्रांति! जय भारत!!

पूरा घटनाक्रम तो, मेरी यादों में, अब धुँधला गया है। प्रारम्भ तो लगभग शून्य है, किन्तु अन्त कुछ–कुछ दृष्टि पटल पर उतरता आ रहा है..... बात कुछ यूँ शुरू होती है कि यहाँ के दैनिक समाचार–पत्र 'निरंजन' के सम्पादक– स्वामी श्री शम्भुनाथ सक्सेना ने, उस भोर, मुझसे कहा– 'शैवाल, डॉ. भगवानदास जी माहौर ग्वालियर आए हुए हैं। मैं उन्हें भोजन पर आमंत्रित करना चाहता हूँ। यह कार्य तुम ही कर सकते हो।'

मुझे यह भी याद नहीं आ रहा कि माहौर जी यहाँ ग्वालियर किस कार्यक्रम में आए हुए थे? शम्भुनाथ जी ने यह दायित्व मुझे ही क्यों सौंपा? माहौर जी से मैं नितान्त अपरिचित था। कभी उनसे मिला भी नहीं था। हाँ, एक कारण अवश्य हो सकता है– वे शायद, हिन्दी साहित्य सभा में आमंत्रित थे, और मैं सभा से जुड़ा था।

यह तो तय है कि शम्भुनाथजी उनसे परिचित रहे होंगे, कारण, मैंने जैसे ही उन्हें उनका आमंत्रण दिया, उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्हें मैंने कहाँ से लिया? जिंसी नाला नं. एक पर स्थित निरंजन–कार्यालय अर्थात् शम्भुनाथ जी के निवास तक, उन्हें किसी वाहन से लाए अथवा पैदल ही? उनके विराट व्यक्तित्व का तब मुझे थोड़ा भी अनुमान न था कि वे सशस्त्र क्रांति के महानायक– शहीदे–

आजम भगतसिंह तथा नर–नाहर चन्द्रशेखर आजाद के अभिन्न साथी एवं अमर सेनानी थे... अब भारी मलाल है कि तब उनकी चरण–रज, माथे से क्यों न लगा ली! दोनों का मिलन.... वार्तालाप... यह–सब तो हुआ ही होगा... चलिए, अब भोजन की मेज पर चलते हैं। हम तीनों बैठ गए हैं। गर्म–गर्म पूड़ियाँ शायद तीन तरह की सब्जियाँ, और इनके साथ एक विशेष चीज–भिण्ड का मशहूर पेड़ा–केसर–पेड़ा! तब, पेड़ों में असली केसर पड़ा करती थी।

'यह शैवाल की जन्मभूमि का पेड़ा है। भिण्ड का प्रसिद्ध केसर–पेड़ा। वहीं के किले में इनका जन्म हुआ, इसीलिए तो ये ऐतिहासिक हैं' – बताते–बताते शम्भुनाथ जी अपनी निर्मल हँसी नहीं रोक पाए। फिर बोले– 'इनके पिताश्री कन्हैयालाल जी सेशन्स जज थे, कोर्ट तथा रेजीडेन्स किले में ही था–'

'तो, जन्म वहाँ होना ही था!' माहौर जी ने बात पूरी की, और जोर से हँस पड़े।'

'.....और आपकी जन्मभूमि?' यकायक ही मैं पूछ बैठा। 'भाई! मुझे तो कोई किला नसीब नहीं हुआ' – अपने विनोदी स्वभाव के लिए सुपरिचित, माहौर जी ने आगे जो कहा, वह उनके उत्कट देश–प्रेम की अमर गाथा बन गई– 'मेरी जन्मभूमि तो यह विराट, परम पुनीता भारतभूमि ही है।'

– ग्वालियर (म. प्र.)

बौद्धिक क्रीडा

बताओ जरा

– देवांशु वत्स

मेंढक अपनी त्वचा से पानी पीता है और केकड़े के दांत उसके पेट में होते हैं।

अनुवाद–मूल गुजराती कहानी

भाप बनी मोती

– पुष्पा अंताणी

एक लड़की थी। तितली जैसी। यहाँ से वहाँ उड़ती रहती थी। उसका नाम इवा था। इवा को तरह–तरह की कल्पना करने में आनंद आता था। कोयल की कुहू सुनते ही वह घर के बाहर दौड़ जाती। उसे ऐसा लगता कि कोयल उसे बुला रही है। वह भी कुहू बोलकर जवाब देती। पौधे में गुलाब का फूल देखकर उसे लगता कि फूल उसके सामने मुस्कुरा रहा है। वह भी फूल के सामने मुस्कुराती। रात को आकाश में टिमटिमाते तारे मानो उसके सामने आँखें झपका रहे हों। इवा भी तारों के सामने आँखें झपकाती। वह ऐसी अनेक कल्पनाएँ करती और अपनी ही मस्ती में नाचती–कूदती रहती थी।

एक दिन इवा तैयार होकर बाहर जा रही थी। उसने गले में सफेद मोतियों की सुंदर माला पहनी थी। बाहर जाने से पहले वह पानी पीने रसोई में गई। पानी पीकर ग्लास नीचे रखने जा रही थी तब उसका हाथ माला में फँस गया और माला टूट गई। सारे मोती टपक–टपक करते नीचे गिर गए। इवा को बहुत दुःख हुआ। उसकी आँखों में आँसू आ गए। तभी कहीं से किसी की आवाज सुनाई दी।

इवा को लगा कोई उसे बुला रहा है। वह इधर–उधर देखने लगी। अचानक उसकी नजर गैस के चूल्हे पर पड़ी। माँ ने वहाँ पतीले में पानी उबलने के लिए रखा था। पानी उबलने की आवाज सुनाई दे रही थी। इवा को लगा कि पानी उसे कुछ कहता चाहता है उसने फिर किसी को बोलते हुए सुना–

''अरे इधर देख, इवा, मैं बोल रही हूँ।''

इवा ने कहा– ''कौन?''

''मैं... भाप.... यहाँ ऊपर देख।''

इवा ने उपर देखा। पतीले में उबलते हुए पानी से उठती भाप ऊपर की तरफ जा रही थी। इवा उसे देखने लगी।

''हाँ, मैं ही हूँ... भाप.... तू दुखी और मैं भी दुखी'', भाप ने कहा।

इवा ने जवाब दिया– ''मैं तो इसलिए दुखी हूँ कि मेरी माला टूट गई और उसके सारे मोती नीचे गिरकर बिखर गए हैं। तुम्हें किस बात का दुःख है?''

भाप ने कहा– ''मेरे दुःख का कारण भी तेरी माला के ये मोती ही हैं।'' इवा को ताज्जुब हुआ। उसने पूछा– ''वह कैसे?''

भाप ने कहा– ''तुम्हारे मोती का रूप देखकर मुझे अपने आपसे नफरत होने लगी है! यह सारे मोती... आ... हा... हा... हा....। क्या रूप है इनका! कितने सुंदर हैं.... और मैं? न तो मेरा तो कोई रूप है, न कोई आकार.... मुझे भी मोती बनना है। इवा, मैं क्या करूँ?''

इवा तुरंत बोली– ''एक काम कर, तू इस मोती से ही पूछ ले।''

भाप ने मोती से पूछा– ''मोती, मोती.... मुझे भी तुम्हारे जैसा बनना हो तो मैं क्या करूँ?''

मोती ने कहा– ''हमें क्या बनना है वह हम तय नहीं कर सकते। इसका निर्णय तो भगवान ही करता है। तू भगवान के पास जा।''

''भगवान कहाँ मिलेंगे?'' भाप ने पूछा।

''ऊपर आकाश में।'' मोती ने उत्तर दिया।

भाप को मोती बनना ही था इसलिए वह भगवान को मिलने के लिए उतावली हो गई। जाने से पहले उसने इवा से कहा– ''देखना, एक दिन मैं भी मोती बनकर तेरे पास आऊँगी।''

इवा ने सोचा, भाप मोती कैसे बनेगी? फिर भी वह बोली– ''अच्छा! मैं तेरी प्रतीक्षा करूँगी। जल्दी से वापस आना। बेस्ट लक!''

भाप आकाश की ओर जाने लगी। कई रातें और कई दिन बीत गए। ठंड लगी, गर्मी लगी फिर भी

भाप ऊपर, और ऊपर, उससे भी ऊपर दौड़ती हुई आकाश की ओर जाने लगी। आकाश तक पहुँचते कई महिने बीत गए। आखिरकार उसने आकाश में भगवान को ढूँढ ही लिया।

भगवान के पास जाकर भाप ने कहा– ''भगवान! आपने मुझे ऐसा क्यों बनाया?''

भगवान बोले– ''क्यों! क्या हुआ?''

भाप बोली– ''मेरा ना कोई आकार है, ना तो कोई कद। मेरा कोई रूप ही नहीं है। मुझे अपने आप पर शर्म आती है। मैं खुबसूरत मोती बनना चाहती हूँ। आप मुझे मोती बना दो।''

भाप की बात सुनकर भगवान हँसने लगे। फिर बोले– ''मोती बनना इतना आसान नहीं है। तू तो भाप है। मोती बनने के लिए तुझे कड़ी तपस्या करनी होगी।'' भाप बोली– ''कोई बात नहीं, आप जो बोलोगे वह तपस्या मैं करूँगी। पर मुझे मोती तो बनना ही है।'' भगवान बोले– ''ठीक है! तो फिर आज से ही तपस्या शुरु कर दे।''

भाप तपस्या करने के लिए दौड़ी और कई दिनों तक तपस्या करती रही। फिर एक दिन जब भाप ने आँखें खोली तो वह अचंभित रह गई। यह क्या? मैं तो पूरी बदल ही गई! अरे, मैं काला बादल बन गई हूँ।

वह रोते-रोते भगवान के पास गई।

भगवान से बोली– ''भगवान... भगवान.... आपने यह क्या कर दिया? मुझे तो सुंदर मोती बनना था और आपने मुझे काला बादल बना दिया? आपने यह अच्छा नहीं किया, भगवान। आपने जो कहा वह तपस्या मैंने की। अब तो मुझे मोती बना दो।''

भगवान ने कहा– ''शांत हो जा, मैं तेरी तपस्या से बहुत खुश हूँ। जा, मैं तुझे मोती बनाकर धरती पर भेज रहा हूँ।

उसी समय चारों ओर अँधेरा छा गया। बिजली चमकने लगी। बादल गरजने लगे।

बिजली कड़कने और बादल गरजने की

आवाजें सुनकर इवा दौडती हुई आँगन में आई। उसे लगा कि अब तो अवश्य वर्षा होगी। इतने में वर्षा प्रारंभ हो गई। जैसे ही वर्षा की हर एक बूँद जमीन से टकराने लगी, मानो उसमें से अनगिनत मोती टपकने लगें हों। इवा इतना सुन्दर दृश्य देख ही रही थी कि वर्षा की बूँदों से आवाज सुनाई दी।

इवा, ''मैं मोती बनकर आ गई हूँ।''

इवा आश्चर्य से इधर-उधर देखने लगी, यह कौन बोला? ''तुम कौन हो?'' इवा ने पूछा।

''भूल गई? मैं भाप.... देख, तेरे आँगन में मोती बनकर बरस रही हूँ।'' इवा बहुत खुश हो गई। उसने कहा– ''हाँ! बारिश की बूँदें सचमुच मोतियों की तरह जमीन पर बरस रही हैं।

इतने सारे मोती देखकर इवा खुश हो गई। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और आकाश से गिरते मोतियों को अपनी हथेली में लेने लगी।

– कर्णावती (गुजरात)

बच्चों-किशोरों के कम्प्यूटर वाले प्रोफेसर राजारमन

– सूर्यकांत शर्मा

बच्चो! जब भी तुम कम्प्यूटर को देखते और खोलते हो, तो आपको लगता होगा कि इसके बिना तो आपकी-हमारी दुनिया अधूरी या असंभव है। कम्प्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न अंग आपको लगता से उससे अधिक शिक्षा और जीवन में आगे बढ़ने का रास्ता और साधन दोनों बन चुका है। पर कभी अपने दादा-दादी, नाना-नानी से पूछना कि बिना कम्प्यूटर जीवन कितना धीमा-धीमा सा और कष्टकारी मेहनत का था। आप सोच रहे होंगे कि कम्प्यूटर हमारे जीवन में कैसे, कब और कौन लाया? जी हाँ! आपने ठीक तुरंत और सही सोचा!

आओ आपको बताते हैं कि कम्प्यूटर को हमारे भारतवर्ष में लाने वाले पुरोधा- प्रोफेसर वैद्येश्वरन राजारमन रहे। उन्होंने अपना जीवन कम्प्यूटर विज्ञान को भारतीय शिक्षा जगत में रचाने में समर्पित कर दिया और इस महान योगदान में उनकी पत्नी धर्मा वैद्येश्वरन राजारमन भी सक्रिय प्रतिभागी भी रहीं हैं।

कम्प्यूटर विज्ञान का यह मनीषी आठ सितम्बर १९३३ को मद्रास प्रेसीडेंसी के एक हिस्से इरोड में श्री रामा स्वामी वैद्येश्वरन और सारदा के घर में हुआ। उन्होंने १९४९ में मद्रास एजुकेशन एसोसिएशन (जिसे अब डीटीईए के रूप में जाना जाता है) हायर सेकेंडरी स्कूल, नई दिल्ली के पहले बैच के छात्र के रूप में एचएससी परीक्षा उत्तीर्ण की।

वर्ष १९५२ में दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफन कॉलेज से भौतिकी में बीएससी (ऑनर्स) के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की और १९५५ में आईआईएससी (इलेक्ट्रिकल कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग) का डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर (आईआईएससी) में अपनी उच्च शिक्षा जारी रखी। वे मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कैम्ब्रिज में शामिल हो गए, जहाँ से उन्होंने १९५९ में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में एमएससी की डिग्री प्राप्त की।

इसके बाद, उन्होंने विस्कॉन्सिन-मैडिसन विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और अनुकूली नियंत्रण प्रणालियों पर शोध किया, १९६१ में पीएचडी प्राप्त की। प्रोफेसर राजारमन ने १९६४ में उन्होंने धर्म से विवाह किया और वे जीवन पर्यंत उनकी पत्नी और सक्रिय सहचरी भी रही हैं।

उनके सक्रिय प्रयत्नों से आई आई टी कानपुर में १९६५ में देश का पहला औपचारिक कम्प्यूटर साइंस प्रोग्राम प्रारंभ किया था और फिर तकनीकी क्षेत्र की नींव रखी गई और इसके पश्चात तकनीकी क्रांति का उदय भी हुआ।

प्रोफेसर राजारमन ने लगभग साठ वर्षों तक भारतीय कम्प्यूटिंग जगत के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें सुपर कम्प्यूटिंग, एमसीए प्रोग्राम की शुरुआत, और कई डिजिटल युग की परियोजनाएँ शामिल हैं। एक और मजेदार बात,

उनके छात्र आज देश-विदेश में तकनीकी नेतृत्व में अग्रणी हैं, जिनमें इंफोसिस के संस्थापक एन. आर. नारायण मूर्ति और टीसीएस के पहले सीईओ फकीर चंद कोहली के नाम शामिल हैं।

बच्चो! यह कल्पना से परे था कि उस समय भारत के लोग यह नहीं जानते थे कि सुपर कम्प्यूटर दो शब्द हैं या एक! ?! देश में इस मेधावी और भविष्य दृष्टा वैज्ञानिक ने आयआयएससी बेंगलूरू में सुपर कम्प्यूटिंग और पैरेलल कम्प्यूटिंग क्षमताओं के निर्माण में योगदान दिया।

उन्होंने विज्ञान, इंजीनियरिंग और वाणिज्य के छात्रों के लिए एमसीए पाठ्यक्रम शुरू कर आईटी उद्योग की मानव आवश्यकताओं को पूरा किया। विशेष रूप से प्रोफेसर राजारमन ने सुपर कम्प्यूटर निर्माण में अग्रणी और महती भूमिका निभाई।

अपने मेहनती जीवन में उन्हें शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (१९७६) ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार, होमी भाभा अन्य और पद्म भूषण (१९९८) मिले। प्रो. राजारमन २० से अधिक टेक्स्टबुक्स/पाठ्य पुस्तकों के लेखक रहे हैं, जो आज भी देशभर के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती हैं। उनका जीवन भारतीय डिटिजल क्रांति, ई-गवर्नेंस परियोजनाओं (जैसे भूमि और कावेरी प्रोजेक्ट्स) और कम्प्यूटर शिक्षा के विकास को समर्पित रहा। वर्ष १९८७ में, उन्होंने स्वदेशी सुपर कम्प्यूटर विकसित करने के लिए उन्नत कम्प्यूटिंग विकास केंद्र (सी-डीएसी) की स्थापना की सिफारिश करने वाली समिति की अध्यक्षता की, जिसने देश को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ाया।

प्रोफेसर राजारमन को हमेशा एक महान शिक्षक, विद्वान और मार्गदर्शक के साथ-साथ आज के आधुनिक और आत्मनिर्भर भारत के कर्णधार के रूप में याद किया जाएगा। इसलिए बच्चों अब अगली बार जब भी तुम कम्प्यूटर खोलो तो प्रोफेसर वैदेश्वरन राजारमन को अवश्य याद रखना और उन्हें सादर नमन भी करना। वे अब हमारे बीच नहीं रहे।

- नई दिल्ली

भूल-भुलैया

ढ से ढपली

गायक महेन्द्र कुमार ढपली की थाप पर गीत गाना चाहता है। ऊपर रखी ढपली के पास सही मार्ग से महेन्द्र को पहुँचाने में सहायता करें।

- चाँद मोहम्मद घोसी
नन्हा बाजार ,
मेढ़ता सिटी, (राजस्थान)

समय यात्रा

– रंजना मिश्रा

एक समय था, जब मनुष्यों ने आकाश को छूने का सपना देखा था। यह सपना धीरे–धीरे वास्तविकता बनता गया और मनुष्य ने अंतरिक्ष में चरण रखा। धीरे–धीरे उन्होंने अन्य ग्रहों पर कॉलोनियाँ बसाना शुरू कर दिया। इसी दौरान एक युवा वैज्ञानिक रोहन ने एक ऐसी खोज की जिसने ब्रह्मांड की दिशा ही बदल दी।

रोहन एक प्रतिभाशाली वैज्ञानिक था। वह हमेशा कुछ न कुछ नया करने के लिए उत्सुक रहता था। दिन–रात एक करके वह प्रयोग करता रहता था। एक दिन अचानक उसकी नजर एक पुराने ग्रंथ पर पड़ी। उसमें समय यात्रा के बारे में विस्तार से बहुत कुछ लिखा था।

रोहन उसमें लिखी हुई जानकारियों से काफी प्रभावित हुआ और उसने समय यात्रा पर शोध करना शुरू कर दिया। कई वर्षों के कड़े परिश्रम के बाद, आखिरकार रोहन ने एक ऐसी मशीन बना डाली जो समय में यात्रा कर सकती थी।

यह मशीन देखने में एक साधारण–सी मशीन लगती थी, लेकिन इसके अंदर एक अद्भुत शक्ति छिपी हुई थी। रोहन ने अपनी मशीन को एक गुप्त स्थान पर छुपा दिया और समय–समय पर उसमें बैठकर अतीत और भविष्य की यात्रा करने लगा।

एक दिन रोहन ने अपनी मशीन में बैठकर प्राचीन मिस्र के समय में जाने का निर्णय किया। वह पिरामिडों के निर्माण के समय में गया और उसने देखा कि कैसे प्राचीन मिस्री लोगों ने इतनी विशाल संरचनाओं का निर्माण किया था।

रोहन ने यह भी देखा कि उस समय कैसे राजाओं और रानियों का जीवन व्यतीत होता था। जब रोहन वापस अपने समय में आया, तो वह दंग रह गया। सब कुछ बदल गया था। इतिहास का रुख ही बदल गया था।

रोहन को समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा कैसे हुआ। तभी उसे याद आया कि जब वह प्राचीन मिस्र में था, तो शायद उसने अनजाने में कुछ ऐसा कर दिया होगा जिसके कारण से इतिहास बदल गया होगा।

रोहन को अपनी गलती का अनुभव हुआ और उसने तुरंत अपनी मशीन को नष्ट करने का निर्णय किया। उसे डर था कि यदि कोई और उसकी मशीन को खोज लेगा, तो वह इसका दुरुपयोग कर सकता है। रोहन ने अपनी मशीन को नष्ट करने के लिए उसके टुकड़े–टुकड़े कर दिए और उन्हें अलग–अलग स्थानों पर छुपा दिया। रोहन ने अपनी मशीन को नष्ट करके एक बड़ी साँस ली।

लेकिन उसकी चिंता अभी दूर नहीं हुई थी। वह जानता था कि ब्रह्मांड में समय यात्रा की तकनीक का रहस्य हमेशा के लिए दबा नहीं रह सकता। रोहन को पता था कि उसकी मशीन के जो अवशेष अभी भी उपस्थित थे। वे भविष्य में एक बड़ा खतरा बन सकते थे। कुछ समय बाद, रोहन को पता चला कि एक गुप्त समूह के वैज्ञानिकों ने उसकी मशीन के अवशेषों को खोज निकाला है।

वे उसे फिर से बनाने का प्रयत्न कर रहे थे। यह समूह डॉ. ली के नेतृत्व में था, जो एक अत्यंत महत्वाकांक्षी और खतरनाक व्यक्ति था। डॉ. ली का सपना था कि वह समय यात्रा कि शक्ति का उपयोग करके इतिहास को बदल दे और एक ऐसा विश्व बनाए जो उसके नियंत्रण में हो।

रोहन ने निश्चय किया कि उसे डॉ. ली को रोकना होगा। उसने अपने कुछ विश्वासपात्र मित्रों के साथ मिलकर एक गुप्त संगठन बनाया। इस संगठन का नाम था 'टाइम गार्ड्स'। टाइम गार्ड्स का उद्देश्य

था, ब्रह्मांड में समय यात्रा की तकनीक को सुरक्षित रखना और इसका दुरुपयोग रोकना। रोहन और उसकी टीम ने डॉ. ली के ठिकाने का पता लगाया। यह एक दूरस्थ द्वीप पर स्थित था।

जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्हें पता चला कि डॉ. ली ने एक विशाल प्रयोगशाला बना रखी है। इस प्रयोगशाला में वह समय यात्रा की एक नई मशीन बना रहा था, जो रोहन की मशीन से कहीं अधिक शक्तिशाली थी। रोहन और उसकी टीम ने डॉ. ली के ठिकाने पर हमला कर दिया।

एक भयंकर लड़ाई हुई। रोहन और उसकी टीम ने डॉ. ली के सैनिकों और रोबोटों का डटकर मुकाबला किया। आखिरकार रोहन ने डॉ. ली को हरा दिया और उसकी नई मशीन को नष्ट कर दिया।

लेकिन डॉ. ली की मौत के बाद भी खतरा पूरी तरह से टला नहीं था। डॉ. ली के कई सहयोगी अभी भी जीवित थे और वे रोहन से बदला लेने की ताक में थे।

रोहन को पता था कि उसे और उसकी टीम को सतर्क रहना होगा। टाइम गार्ड्स ने ब्रह्मांड के विभिन्न कोनों में समय यात्रा की तकनीक की तलाश प्रारंभ कर दी।

उन्हें कई बार खतरनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

एक बार उन्हें एक ऐसे ग्रह पर जाना पड़ा, जहाँ समय यात्रा की तकनीक का उपयोग करके एक भयानक युद्ध छिड़ गयाथा। रोहन और उसकी टीम ने इस युद्ध को रोकने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। एक और बार, उन्हें एक ऐसे वैज्ञानिक का सामना करना पड़ा जो समय यात्रा की शक्ति का उपयोग करके ब्रह्मांड को नष्ट करने की योजना बना रहा था।

रोहन ने उस वैज्ञानिक को समझाने का बहुत प्रयत्न किया, किन्तु हर बार उन्हें एक नई चुनौती का सामना करना पड़ता था। कई वर्ष बीत गए। रोहन बूढ़ा हो गया था, लेकिन वह अभी भी टाइम गार्ड्स का नेता था वह जानता था कि समय यात्रा की शक्ति एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और इसे बहुत सावधानी से उपयोग किया जाना चाहिए।

रोहन चाहता था कि आने वाली पीढ़ियाँ समय यात्रा की शक्ति का उपयोग अच्छे कार्यों के लिए करें। उसने अपनी पूरी जिंदगी इसी काम में लगा दी।

– कानपुर (उ. प्र.)

आस्था, सौंदर्य और विज्ञान का संगम

– विभा कनन

भारतीय संस्कृति का रंगीन आँगन भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि यहाँ कला केवल मनोरंजन या सजावट तक सीमित नहीं रहती, बल्कि जीवन के हर पहलू से जुड़ी होती है। चाहे मंदिरों की भित्तिचित्र हों, लोकनृत्य हों या आँगन में बनी रंग-बिरंगी आकृतियाँ- सबमें एक गहरी आध्यात्मिक और सामाजिक भावना छिपी होती है। दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडू में प्रचलित कोलम इसी परंपरा का अद्भुत उदाहरण है। हर सुबह महिलाएँ जब अपने घर के आँगन को कोलम से सजाती हैं, तो वह केवल सौंदर्य का कार्य नहीं करतीं, बल्कि उस क्षण में आस्था, सौंदर्य और विज्ञान का अनूठा संगम दिखाई देता है।

श्रद्धा की रेखाएँ, शुभता की बिंदी

तमिलनाडू के किसी भी मोहल्ले में सुबह-सुबह निकल जाएँ, तो आपको हर घर के आँगन में सफेद पाउडर से बनी ज्यामितीय आकृतियाँ दिखाई देंगी। इन्हें ही कोलम कहा जाता है। प्राचीन मान्यता है कि कोलम घर के मुख्य द्वार पर बनाई जाती है ताकि देवी-देवताओं का आशीर्वाद घर में प्रवेश करे और नकारात्मक शक्तियाँ दूर रहें।

त्योहारों में कोलम का महत्व और बढ़ जाता है। जैसे पोंगल पर विशेष प्रकार के कोलम बनाए जाते हैं जिनमें सूर्यदेव की उपासना और समृद्धि का संदेश होता है। विवाह और शुभ अवसरों पर रंगीन कोलम का प्रयोग होता है, जो न केवल सौंदर्य बढ़ाते हैं, बल्कि मंगल का प्रतीक भी होते हैं। इस प्रकार कोलम केवल एक सजावट नहीं, बल्कि धार्मिक विश्वास और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक है।

आँगन से झरता सौंदर्य का संगीत

भारतीय स्त्रियाँ अपने दैनिक जीवन को भी कला में ढाल देती हैं। कोलम इसका सबसे सुंदर उदाहरण है। जब महिला सुबह चावल के आटे या रंगीन पाउडर से बिंदु और रेखाओं को जोड़कर जटिल आकृतियाँ बनाती है, तो उसमें उसकी रचनात्मकता और कलात्मक दृष्टि झलकती है।

यह कला धैर्य और एकाग्रता की माँग करती है। साधारण बिंदुओं को जोड़कर जटिल आकृतियाँ बनाना किसी कलाकार के धैर्य और सौंदर्यबोध की पहचान है।

कोलम केवल आँगन की शोभा नहीं बढ़ाता, बल्कि समाज में एक सामूहिक सांस्कृतिक अनुभव भी देता है। त्योहारों पर महिलाएँ मिलकर बड़े-बड़े कोलम बनाती हैं, जिससे सामाजिक मेल-जोल, सौहार्द और बहनापा प्रकट होता है।

इस प्रकार कोलम स्त्री की कला, उसके सौंदर्यबोध और उसकी संवेदनशीलता का जीवंत प्रमाण है।

रेखाओं में गणित, बिंदुओं में विज्ञान कोलम को केवल धार्मिक या सांस्कृतिक दृष्टि से देखना अधूरा होगा। इसमें गहरा वैज्ञानिक आधार भी है।

१) गणित और ज्यामिति

कोलम की आकृतियाँ बिंदुओं और रेखाओं पर आधारित होती हैं। इनमें सिमेट्री (Symmetry) ज्यामितीय पैटर्न और गणितीय संरचना स्पष्ट दिखाई देती है।

यह बच्चों और युवाओं को गणितीय सोच और तार्किकता सिखाने का एक सहज साधन है।

२) पर्यावरण और पारिस्थितिकी

परंपरागत रूप से कोलम चावल के आटे से बनाए जाते हैं।

यह पक्षियों, चींटियों और छोटे जीवों के लिए भोजन का स्रोत बनता है।

इस तरह कोलम मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य और सहअस्तित्व का संदेश देता है।

३) मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

कोलम बनाने की प्रक्रिया ध्यान (Meditation) जैसी है। पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करने से एकाग्रता और मानसिक शांति मिलती है।

यह तनाव घटाता है और मन को सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है।

इस प्रकार कोलम में निहित वैज्ञानिकता यह सिद्ध करती है कि यह कला केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन, गणितीय समझ और पर्यावरणीय संतुलन का साधन भी है।

परंपरा से आधुनिकता की ओर कोलम। आज भले ही शहरी जीवन व्यस्त हो गया है और पारंपरिक कलाओं के लिए समय निकालना कठिन होता जा रहा है, फिर भी कोलम की परंपरा जीवित है।

प्रतियोगिताएँ और प्रदर्शनियाँ: विद्यालयों, कॉलेजों और सांस्कृतिक आयोजनों में कोलम प्रतियोगिताएँ होती हैं, जिनसे युवा पीढ़ी जुड़ती है। वैश्विक पहचान: विदेशों में भारतीय समुदाय पोंगल और दीवाली जैसी त्योहारों पर कोलम का आयोजन करते हैं, जिससे इसे वैश्विक पहचान मिली है।

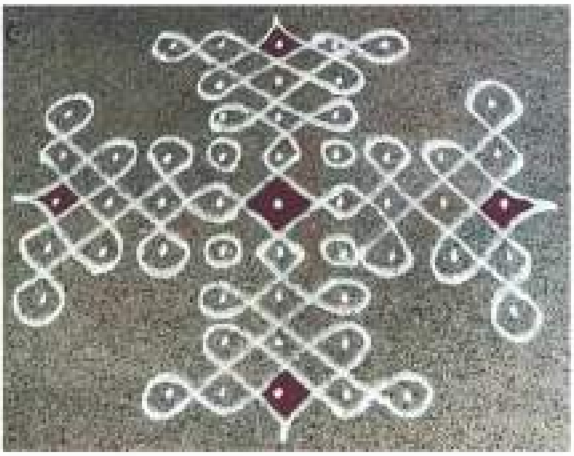

डिजिटल और आधुनिक प्रयोग: आज कोलम डिजाइन फैशन, वस्त्रों, इंटीरियर डिजाइन और डिजिटल आर्ट तक पहुँच गए हैं।

त्योहारों में कोलम का महत्व त्योहारों के अवसर पर कोलम का विशेष स्थान है। यह केवल आँगन को सुंदर बनाने के लिए नहीं, बल्कि शुभता और समृद्धि का प्रतीक है।

१) पोंगल– तमिलनाडु का प्रमुख फसल उत्सव पोंगल को कोलम से जोड़ा जाता है। इस पर्व पर घर–घर के आँगन में रंग–बिरंगे कोलम बनाए जाते हैं, जिनमें गन्ना, सूर्य, चावल और बैल जैसे प्रतीकों का चित्रण होता है। यह प्रकृति और कृषि के प्रति आभार व्यक्त करने का तरीका है।

२) दीपावली– दीपावली पर लक्ष्मीजी का स्वागत करने के लिए घरों में सुंदर कोलम बनाए जाते हैं। यह माना जाता है कि लक्ष्मीजी स्वच्छ और सज्जित घरों में प्रवेश करती हैं, इसलिए इस अवसर पर कोलम को विशेष रूप से सजाया जाता है।

३) ओणम– केरल में ओणम पर्व पर फूलों से बनाए जाने वाले कोलम को 'पुक्कलम' कहते हैं। यह सामूहिकता और आनंद का प्रतीक है। स्त्रियाँ और बच्चे मिलकर बड़े आकार के पुक्कलम बनाते हैं, जिससे समाज में एकता और सहयोग की भावना प्रबल होती है।

४) अन्य अवसर– विवाह, नामकरण, उपनयन संस्कार आदि अवसरों पर भी कोलम बनाए जाते हैं। यह शुभ कार्यों की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है।

संरक्षण की आवश्यकता: नई पीढ़ी को यह समझाना आवश्यक है कि यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि संस्कृति और विज्ञान का खजाना है, जिसे सहेजना आवश्यक है।

'आस्था, कला और विज्ञान का शाश्वत संगम कोलम तमिलनाडु की आत्मा है। यह केवल आँगन की सजावट नहीं, बल्कि आस्था, सौंदर्य और विज्ञान का ऐसा अद्भुत संगम है, जो समाज को आध्यात्मिकता, कला और तार्किकता–तीनों का संदेश देता है।

आस्था से यह घर को शुभता और देवत्व से भर देता है, सौंदर्य से यह स्त्री की रचनात्मकता और सामूहिकता को प्रकट करता है और विज्ञान से यह गणित, पर्यावरण और मानसिक स्वास्थ्य की शिक्षा देता है। आज आवश्यकता है कि इस परंपरा को केवल एक प्राचीन रीति मानकर न छोड़ दिया जाए, बल्कि इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाया जाए। क्योंकि कोलम केवल जमीन पर बने आकृतियाँ नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की जड़ें और नारी शक्ति की अमर रचनात्मकता हैं।

– कोयम्बतूर (तमिलनाडु)

छः अँगुल मुस्कान

शिक्षक (बच्चों से) – आम तोड़ने का सबसे अच्छा समय कौन सा है ?

सन्नी–जी जब माली बाग में न हो।

*****

राजू माँ जरा बताना लीची के पेड़ की क्या पहचान होती है ?

माँ– जिस पेड़ पर लीची लगी हो।

*****

डी.टी.सी. बस का कंडेक्टर – (सोनू से) जरा टिकट दिखाना।

सोनू – जेब से मुड़ी–तुड़ी टिकट कंडेक्टर को दिखा दिया।

कंडेक्टर– यह टिकट तो पुरानी है।

सोनू – यह बस भी तो खटारा है।

*****

गोलू डॉक्टर से – मेरे सिर में अभी भी दर्द रहता है। जबकि आपने कहा था कि खेलने से दर्द ठीक हो जाएगा।

डॉक्टर – कौन सा गेम खेलते हो ?

गोलू – मोबाइल पर कार रेस।

*****

नेहा माँ से – क्या डाइटिंग करने से मोटी चीज पतली हो जाती है ?

माँ – हाँ लेकिन क्यों ?

नेहा – माँ! शाला में टीचर बोल रही थी कि तुम्हारी अक्ल मोटी हो गई है। ठीक कर लो।

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

हरिकथा गायिका

– रजनीकांत शुक्ल

तमिलनाडु के चेंगलपट्टू जिले में रहने वाली जननी नारायण वर्ष २०१६ में जब छः वर्ष की थी तभी कर्नाटक संगीत से उनका परिचय हो गया था। दरअसल जननी के माता और पिता दोनों ही संगीत के प्रेमी थे। बचपन से ही रुचि देखकर उन्होंने जननी का प्रवेश कर्नाटक संगीत की कक्षा में करा दिया। वैसे तो घर पर संगीत का वातावरण होने के कारण जननी का मन उसमें पहले से ही रमता था। किन्तु इसमें महत्वपूर्ण बदलाव तब आया जब हुआ उन्होंने प्रसिद्ध हरिकथा गायिका विशाखा हरि के एक वीडियो को देखा जो उनके मन को अन्दर तक छू गया।

हरिकथा पारंपरिक भारतीय कला का एक रूप है जो आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में प्रचलित है। इस कला में कहानी सुनाते समय गायन, संगीत, अभिनय और नृत्य के तत्वों को मिलाया जाता है। इस कला से हमारे कलाकार सदियों से हमारी पौराणिक हिन्दू कथाओं के माध्यम से आम जनता में धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं का प्रचार करते रहे हैं। वे इस तरह उनमें भक्ति और ज्ञान का संचार करते रहे हैं तथा सत्य तथा धर्म के मूल्यों को भी आम जन तक पहुँचाते रहे हैं।

जब जननी ने हरिकथा गायिका विशाखा हरि को पहली–पहली बार सुना तो उन्हें हरिकथा में कहानी और कर्नाटक संगीत का उनके द्वारा किया गया मेल बेहद भाया। जिसे उन्होंने अनेक बार सुना। बाद में इससे प्रभावित होकर जननी ने भी संकल्प ले लिया कि वे भी हरिकथा गायन की ऐसी ही शैली को अपनाएँगी।

एक बार जब मन में ठान लिया तो फिर उसी दिशा में उन्होंने कदम बढ़ा दिया। हरिकथा में गाए जाने वाले गीतों के रागों उन्होंने सीखा फिर उन गीतों को स्वरबद्ध करने का कौशल भी जननी ने सीख लिया। धीरे–धीरे लगन से सीखते हुए परम्परा में जननी ने कोई कसर न उठा रखी और उनको कर्नाटक संगीत के शिक्षक राम्या श्रीनिवासन, संस्कृत के गुरु रोहित कुमार, अनंतराम शर्मा और स्नेहल देशपांडे का मार्गदर्शन मिला। इन सबके अलावा उन्हें नियमित अंतराल पर पद्मश्री सुधा रघुनाथन का स्नेह आशीष लगातार मिलता रहा।

यही नहीं जननी के अपने विद्यालय पद्मा शेषाद्री बाला भवन सिरुसेरी के प्रधानाचार्य और उनके शिक्षकों ने भी बहुत सहयोग दिया और उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शन के लिए अनेक उपयुक्त अवसर प्रदान किए। उननी के माता–पिता का संपूर्ण प्रोत्साहन उनके लिए किसी वरदान सरीखा रहा। उन्होंने अपने स्वाभाविक अंदाज में जननी को अपनी इस कला यात्रा में आगे बढ़ने का उपयुक्त वातावरण दिया ताकि यह कोई बाहर से आई हुई बात न होकर जननी के मन के अन्दर से फूट पड़ने वाली स्वर और भाव की धारा रहे। अपने सीखने और प्रदर्शन के इस

शुरुआती दौर में जननी ने जुनून के अन्तर्गत खूब मेहनत की तो ऐसे में उनके माता और पिता का भरपूर समर्थन और सहयोग उनके साथ हर कदम पर रहा।

अपनी इसी लगन के परिणाम स्वरूप जननी ने तमिल, अँग्रेजी और संस्कृत भाषा में सौ से भी अधिक प्रस्तुतियाँ दीं। उनकी यह सारी प्रस्तुतियाँ चेन्नई और उसके आसपास के विभिन्न मंदिरों में, विभिन्न संगीत समारोहों में, टेलीविजन पर और भारतीय विद्या भवन जैसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित मंचों पर हुई। उनकी इन प्रस्तुतियों के विषय के रूप में गुरुवायुरप्पन महिमा यानि कि विष्णु भगवान के विशेष रूप की महिमा और थिरुप्पावई यानि कि तमिल संत कवि आंडाल के लिखे तीस पदों वाली कृष्ण भक्ति स्तुति जैसी शृंखला रही जोकि वहाँ के जन मन में पहले से ही बसे हुए हैं।

ऐसे में जननी की इन अभिनव भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने लोगों को विशेष प्रभावित किया। पहले जहाँ जननी नारायण को अपनी हरिकथा प्रस्तुतियों के प्रदर्शन में जहाँ थोड़ा बहुत संकोच रहता रहा था धीरे-धीरे लोगों के पसंद करने से उनके प्रोत्साहन से उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी प्रस्तुतियाँ देना शुरू कर दिया। जिससे उनके हरिकथा गायन में निखार आता चला गया।

इसका परिणाम यह हुआ कि जननी नारायणन की प्रतिभा को विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जाने लगा। यही नहीं वर्ष २०२२-२३ में तमिलनाडू सरकार ने जननी को 'कला इल्लमनी पुरस्कार' प्रदान किया।

हरिकथा गायन सुनने वालों के बीच जननी नारायणन ने अपने भावपूर्ण ढंग से प्रदर्शन कर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई। अपने इस हरिकथा गायन के साथ संगीत प्रदर्शन की प्रतिभा को प्रदर्शित करते हुए उन्होंने तमिल, अँग्रेजी और संस्कृत भाषा में सौ से भी अधिक यादगार प्रस्तुतियाँ दीं। यही नहीं मात्र

चौदह वर्ष की आयु में कर्नाटक संगीत और हरिकथा गायन की अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन्होंने पहला स्थान प्राप्त किया तो सभी का ध्यान उनकी ओर जाना आवश्यक हो गया।

जननी नारायणन ने कला और संस्कृति के क्षेत्र में एक बाल प्रतिभा के रूप में अपनी पहचान बनाई तो उन्होंने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए चयनित कर लिया गया। २६ दिसम्बर 'वीर बाल दिवस' २०२४ के अवसर पर देश की राष्ट्रपति माननीया द्रौपदी मुर्मू जी ने उन्हें देशभर से चुने गए सत्तरह बच्चों के साथ राष्ट्रपति भवन में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पहले उन्होंने देश के प्रधानमंत्री जी से भी भेंट की।

इससे उत्साहित होकर जननी नारायणन अपने देश की इस पारंपरिक 'हरिकथा गायन शैली' को देश में ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय पटल पर लोकप्रिय बनाना चाहती हैं। ऐसा वे कर सकें इसके लिए उन्हें शुभकामनाएँ।

नन्हे मित्रो!

सोच अगर लें मन में हम तो, सब कुछ कर डालें,
पूरा हो सकता हर सपना मन में जो पालें।
लगन लगाकर चलें रात दिन अपनी धुन में हम,
छा जाए सबके दिल पर वो गीत नया गा लें।।

- नई दिल्ली

पैरों के निशान

– मीरा जैन

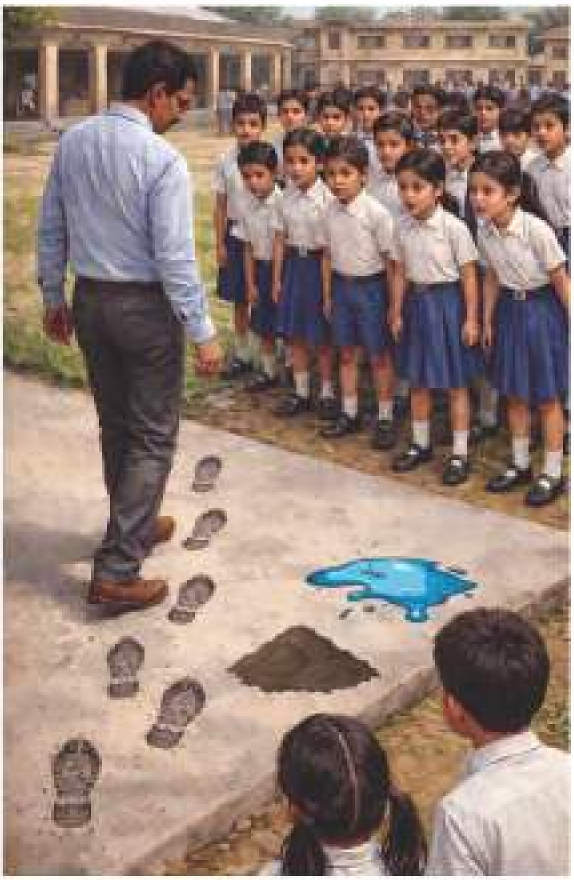

विद्यालय की छुट्टी के पश्चात अपने ही कक्षा की विद्यार्थियों के पीछे चल रहे हैं सोमनाथ जी को परस्पर विद्यार्थियों के द्वारा किया जा रहा वार्तालाप सुनाई पड़ा–

''यह क्या? जब देखो तब गुरु जी पढ़ाने के साथ–साथ कभी नैतिकता तो कभी संस्कार तो कभी मानवीय मूल्यों, न जाने किस–किस पर भाषण देने बैठ जाते हैं इन सबका हमारी पढ़ाई से क्या संबंध, इन सबसे कोई अंक अधिक नहीं मिलने वाले हैं।'' अन्य विद्यार्थियों ने भी हाँ में हाँ मिलाई।

अगले दिन सोमनाथ जी ने बच्चों को पढ़ाने के बजाय बाहर मैदान में ले गए जहाँ सीमेंट कांक्रीट का पक्का फर्श, कच्ची जमीन उसके पश्चात पानी भी था। बच्चों को आदेश दिया– ''बच्चो! आज हम पढ़ाई के बजाय एक मजेदार खेल खेलेंगे तुम सभी को बारी–बारी सामने दिख रहे फर्श, मिट्टी और पानी तीनों पर अपने पैरों के निशान बनाने हैं।''

सारे बच्चे असमंजस में पड़ गए की फर्श, सूखी मिट्टी, पानी तीनों में पैरों के निशान बनाना टेढ़ी खीर थी।

बच्चों ने प्रयत्न किया लेकिन असफल रहे, अंत में सोमनाथ जी गए और कुछ सेकंड में ही पैरों के निशान बना आए फिर बच्चों को समझाते हुए बोले– ''देखो बच्चो! तुम लोग ना फर्श पर ना मिट्टी पर और ना ही पानी में पैरों के निशान बना पाए क्योंकि तुमने तीनों में पैरों के निशान बनाने के लिए अलग–अलग प्रयास किए। मुझे देखो मैंने पानी में पैर डुबाया उन्हीं पैरों को कच्ची जमीन पर रखा और वहीं पैर फिर फर्श पर, मिट्टी और फर्श पर तो निशान बन गए किंतु पानी में नहीं बना।

मैं कहूँगा पानी में भी बना यदि यह पानी नहीं होता तो सूखी मिट्टी तथा फर्श पर मेरे पैरों के निशान बनना असंभव थे अर्थात् पानी चाहे दिखाई नहीं पड़ रहा है लेकिन इन निशानों में समाहित है ठीक इसी तरह जीवनोपयोगी बातें तुम्हारी अंक सूची में भले ही दिखाई नहीं पड़ती है।

किन्तु वह उसमें समाहित होती हैं उत्तम आचार विचार से पढ़ने व समझने की क्षमता में वृद्धि होती है वह परीक्षा में अंकों को ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला को भी श्रेष्ठता की ओर ले जाती है।''

गुरुजी का जवाब सुन सारे बच्चों को अपनी गलती का अनुभव हुआ और उन्होंने तालियाँ बजा गुरुजी के विचारों का सत्कार किया।

– उज्जैन (म. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

ऐसा हो घर

– डॉ. मनोहर भण्डारी

ऐसा घर बनवाएँ कि चिड़ियाँ भी चहचहाएँ– घर अपने रहने के लिए बनवाएँ, फर्नीचर और सामान के लिए नहीं। सामान अधिक अर्थात् धुल, फंगस अधिक, ताजी हवा के लिए जगह कम। स्नानघर और शौचालय अलग–अलग बनवाएँ। बाहरी भाग में काँच का उपयोग न्यूनतम करें, अन्यथा गर्मी के मौसम में बहुत गर्मी का सामना करना पड़ेगा। शयनकक्ष में ताजी हवा के लिए पर्याप्त स्थान रहे, इसलिए सामान कम से कम हो।

वायु प्रवाह और सूर्य प्रकाश की सुविधा अनिवार्य रूप से रहें, रोगाणुओं के प्राकृतिक विनाश के लिए यह आवश्यक है। फिसलन वाली टाइल्स का उपयोग कदापि न करें।

एक भारतीय शौचालय अवश्य हो। एरोसाल प्रभाव को देखते हुए शौचालय कक्षों से दूर बनवाएँ। हो सकें तो एक दो वृक्ष अवश्य हों ताकि पक्षियों का कलरव आपको और आपकी संतानों को स्वस्थ रख सकें।

बच्चों को अलग से कक्ष देने का अर्थ है कि उन्हें निपट अकेला छोड़ देना। अकेलापन कई दृष्टियों से बच्चे और परिवार के लिए अत्यधिक नुकसानदायक है। इससे पारिवारिक विखंडन की मानसिकता का अनायास बीजारोपण भी हो सकता है। जैनों के अपरिग्रह और जापानियों के न्यूनतमवाद (मिनिमलिज्म) से प्रेरणा लें।

जल, वायु, पृथ्वी, आकाश आदि को प्रदूषित करने से बचें।

जल संरक्षण और संवर्द्धन में अपनी महती भूमिका को सुनिश्चित करें। अपने बच्चों और वंशजों के लिए जल का भी संग्रहण करें। घर की छत के वर्षा जल को (रेन वाटर हार्वेटिंग) भूजल बनाने की दिशा में पहल करें। यदि सम्भव हो तो अपनी कॉलोनी की वाटिका में सोकपिट बनवाने की दिशा मे पहल करें। पानी का दुरुपयोग ना हो, इसका ध्यान रखें। अतिथियों के समक्ष पानी का जग और गिलास रखें। या फिर आरंभ में आधा गिलास पानी ही प्रस्तुत करें।

पक्षियों और पशुओं को दाना–पानी दें।

गाय का स्पर्श रोगहारी है– रॉटरडैम, डच, स्विटजरलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका के फार्म में लोगों के लिए गाय का आलिंगन और स्पर्श के सेशन हो रहे हैं। अध्ययनों के अनुसार इससे आनन्द का अनुभव होता है, मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है और तनाव समाप्त हो जाता है। हमारे यहाँ गौमाता को रोटी देने के साथ–साथ स्पर्श की परम्परा सदियों से प्रचलित रही है।

बीबीसी ने अपने एक समाचार का शीर्षक दिया था **इज काऊ हगिंग द वर्ल्डस न्यूस वैलनेस ट्रेण्ड?** यह शीर्षक ही गौमाता के स्पर्श के लाभों का परिचायक है।

बिजली की प्रयासपूर्वक बचत कीजिए। हो सकें तो सूर्य ऊर्जा (सोलर इनर्जी) का उपयोग करें।

दर्दनाशक दवाओं का उपयोग सोच समझ कर करें। जहाँ भी आप काम करते हैं, प्रयास करें कि आपकी भूमिका समाधान में हो, समस्या उत्पन्न करने में कदापि न हो। दूसरों के साथ वैसा आचरण करें, जैसा आप अपने लिए चाहते हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

भीम को हनुमानजी के दर्शन

– मोहनलाल जोशी

प्राण्डव वनवास काट रहे थे। एक दिन द्रौपदी स्नान करने गयी। उसके पास एक दिव्य कमल आकर गिरा। उसने भीम से कहा– ''यह दिव्य कमल बहुत सुंदर है। मुझे और फूल लाकर दो।''

भीम उत्तर दिशा की ओर गए। वहाँ सौगन्धिक नामक कमल का उद्यान था। उसका नाम कदली वन था। मार्ग में एक वानर सो रहा था। उसकी पूँछ से पूरा मार्ग रुका हुआ था।

भीम ने कहा– ''ऐ वानर! रास्ते से हट जाओ। मुझे कदली वन जाना है।''

वानर ने कहा– ''तुम मेरी पूँछ को हटा कर चले जाओ। मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। मेरे से उठा भी नहीं जाता।''

भीम ने वानर की पूँछ को पकड़ा। उसने अपनी सारी शक्ति लगा दी। उससे पूँछ हिली तक नहीं।

भीम ने कहा– ''मैं भीमसेन हूँ। आप अपना परिचय दीजिए।''

वानर अपने मुख्य स्वरूप में आ गए। वे पवनपुत्र हनुमान थे जो भीम के बल का घमंड चूर करना चाहते थे। बल के साथ निरभिमानी होना आवश्यक है। भीम ने क्षमा माँगी और हनुमान जी की अनुमति से भीम कमल के फूल लेकर आ गए।

अर्जुन का निवात कवचों से युद्ध

अर्जुन दिव्यास्त्र लेने स्वर्ग गया था। वहाँ पर उसने इन्द्र से दिव्यास्त्रों की शिक्षा प्राप्त कर ली। अर्जुन इन्द्रलोक में पाँच वर्ष रहा। शिक्षा पूर्ण होने पर इन्द्र ने कहा– ''अर्जुन! तुम्हारी शिक्षा पूरी हो गई है। अब तुम मुझे गुरु दक्षिणा दो। निवात–कवच राक्षस मेरे शत्रु हैं। वे सभी युद्ध में छिप जाते हैं। उन सभी का वध कोई देवता नहीं कर सकता। तुम निवात कवचों का संहार करो। यही मेरी गुरु दक्षिणा है।''

अर्जुन इन्द्र के दिव्य रथ पर सवार हो गया। रथ को मातलि चला रहा था। मातलि बहुत चतुर सारथी था। वह अर्जुन के रथ को समुद्र की तरफ ले गया। समुद्र में भीषण युद्ध छिड़ गया। असुर मायावी युद्ध करने लगे। वे बड़े–बड़े पत्थरों की वर्षा करते थे। अर्जुन ने अपने बाणों से उनकी माया नष्ट कर दी। फिर सभी राक्षसों का वध कर दिया। उसने अपनी गुरु दक्षिणा चुका दी।

– बाड़मेर (राजस्थान)

सौर तूफान

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

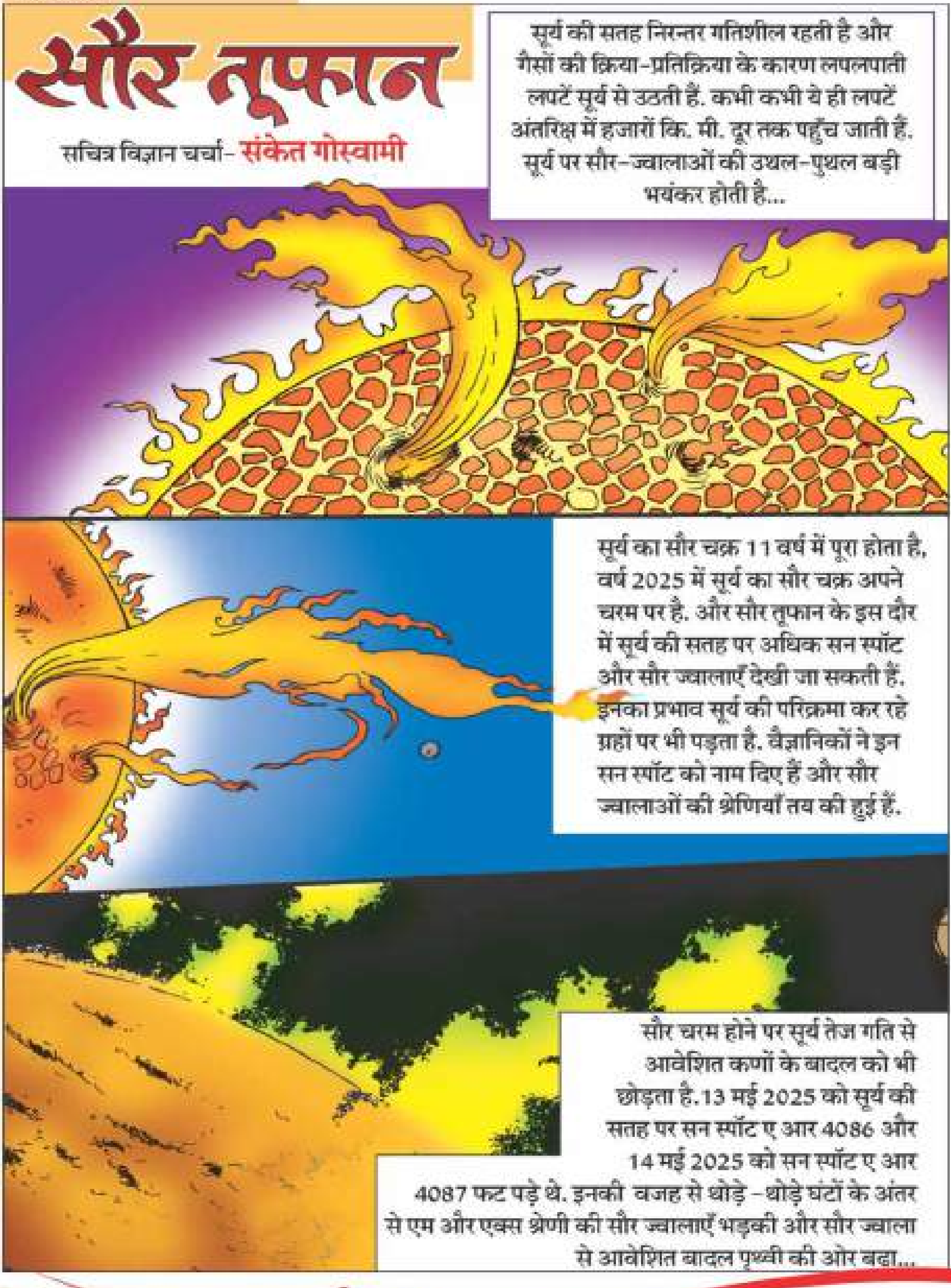

ऐसा 31 मई 2025 को भी हुआ. सन स्पॉट ए आर 4100 फटा, सौर ज्वाला से आवेशित बादल 1 जून 2025 को पृथ्वी से आ टकराए.
इन सौर ज्वालाओं के विकिरण के कारण पृथ्वी में सूर्य की ओर वाले भाग में रेडियो ब्लैक आऊट उत्पन्न हुआ इससे उत्तर-दक्षिण अमेरिका, यूरोप अफ्रीका, मध्य-पूर्व और पूर्व एशिया के देश प्रभावित हुए...
सौर लपटों के प्रभाव के कारण घंटों तक लम्बी दूरी के रेडियो संचार गड़बड़ा जाते हैं, कुतुबनुमा की सुई डगमग कर जाती है. वायुयानों का पृथ्वी से सम्पर्क टूट जाता है हवाई यातायात नियंत्रकों को वैकल्पिक संचार चैनलों की मदद लेनी पड़ती है . आ रहे सौर तूफानों की वजह से पृथ्वी के बुनियादी ढाँचे पर भी प्रभाव पड़ने की संभावना बनी हुई है.
पिछले सात वर्षों में दर्ज की गई सबसे शक्तिशाली सौर ज्वाला 3 अक्टूबर 2024 की एक्स 9 थी. ये सौर ज्वालाओं का शक्तिशाली रूप है.

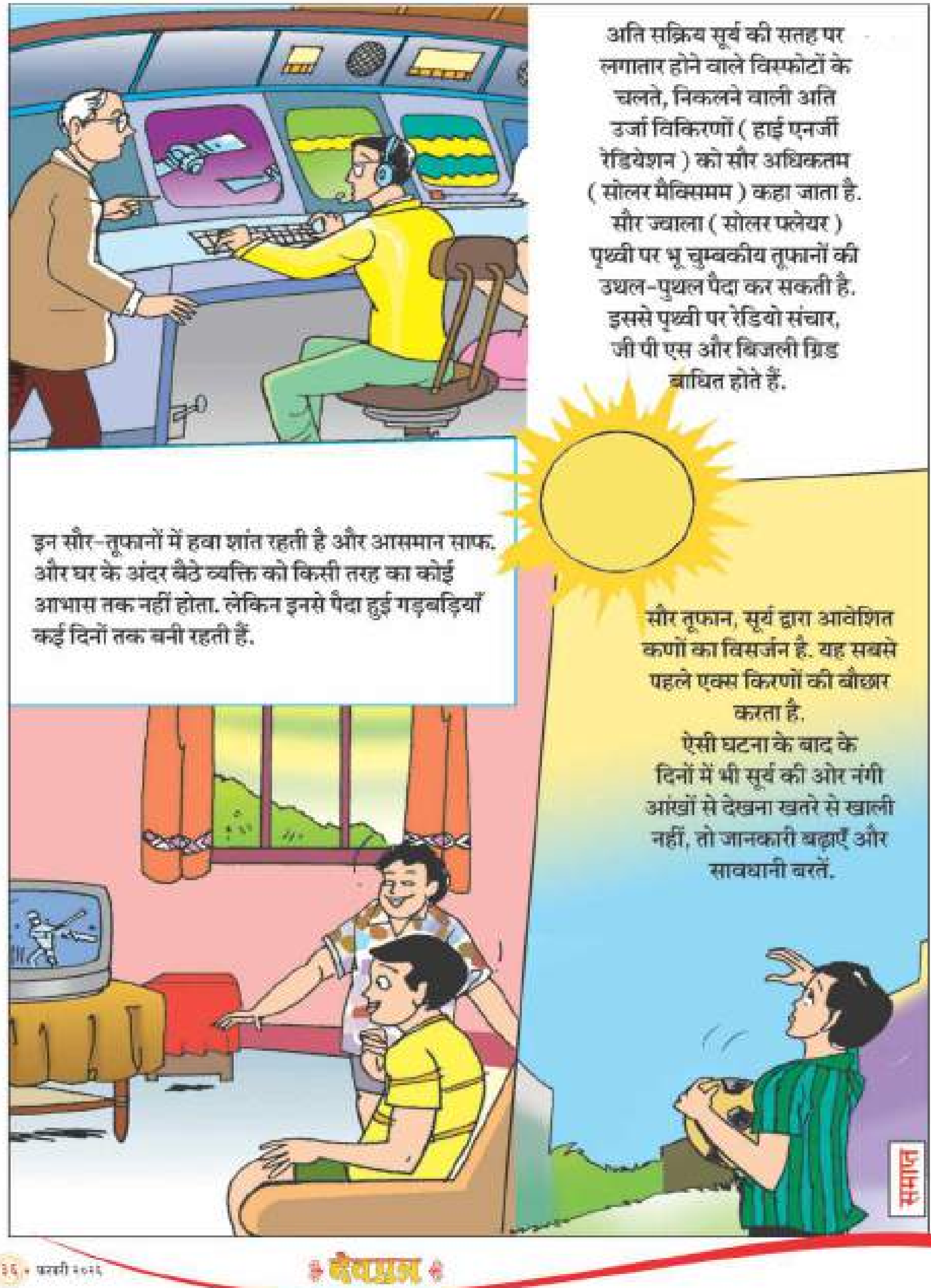
अति सक्रिय सूर्य की सतह पर लगातार होने वाले विस्फोटों के चलते, निकलने वाली अति उर्जा विकिरणों (हाई एनर्जी रेडियेशन) को सौर अधिकतम (सोलर मैक्सिमम) कहा जाता है. सौर ज्वाला (सोलर फ्लेयर) पृथ्वी पर भू चुम्बकीय तूफानों की उथल-पुथल पैदा कर सकती है. इससे पृथ्वी पर रेडियो संचार, जी पी एस और बिजली ग्रिड बाधित होते हैं.
इन सौर-तूफानों में हवा शांत रहती है और आसमान साफ. और घर के अंदर बैठे व्यक्ति को किसी तरह का कोई आभास तक नहीं होता. लेकिन इनसे पैदा हुई गड़बड़ियाँ कई दिनों तक बनी रहती हैं.
सौर तूफान, सूर्य द्वारा आवेशित कणों का विसर्जन है. यह सबसे पहले एक्स किरणों की बौछार करता है. ऐसी घटना के बाद के दिनों में भी सूर्य की ओर नंगी आंखों से देखना खतरे से खाली नहीं, तो जानकारी बढ़ाएँ और सावधानी बरतें.

चीं चीं – चूँ चूँ

– टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

चिड़िया के बच्चों का,
शुरू हुआ चीं चीं – चूँ चूँ!
लगी जोर से भूख,
देखे वे इधर–उधर।
लगे सोचने सबके–सब,
माँ–बापू गये किधर।
सर उठा–उठाकर उनका,
तेज हुआ चीं चीं–चूँ चूँ।
बच्चों की आवाज सुन,
चिड़िया तुरंत उड़ आई।
मुँह में दाने डाल कर,
उनके पंखों को सहलाई।
भरा पेट उनका फिर,
कम हुआ चीं चीं–चूँ चूँ।
फिर चिड़िया ने समझाया,
घर से बाहर जाना नहीं।
कोई कुछ लाकर दे तो,
भूलकर भी खाना नहीं।
सुन रहे थे वे ध्यान से,
बंद हुआ चीं चीं–चूँ चूँ।

– घोटिया, (छत्तीसगढ़)

बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान

– डॉ. रवीन्द्र कान्हेरे

शोध संस्थान है, जिसकी स्थापना भारत के प्रख्यात वनस्पति वैज्ञानिक प्रोफेसर बीरबल साहनी की स्मृति में वर्ष १९४६ में की गई थी। यह संस्थान भारतीय उपमहाद्वीप में पौधों के प्राचीन अवशेषों, जीवाश्मों तथा पुराविज्ञान (Palaeo Science) से संबंधित अनुसंधान का महत्वपूर्ण केंद्र है।

मध्यप्रदेश जीवाश्मों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध प्रदेश है। यहाँ कई स्थानों पर करोड़ों वर्ष पुराने पौधों, वृक्षों एवं जंतुओं के जीवाश्म पाए गए हैं। इनकी खोज से हमें भूवैज्ञानिक इतिहास और जैविक विकास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है मध्यप्रदेश में प्रमुख जीवाश्म स्थल–

१) **सागर जिला**– यहाँ पर पादपों और वृक्षों के जीवाश्म मिले हैं।

२) **मंडला जिला**– नर्मदा नदी घाटी क्षेत्र में डायनासोर के अंडों और हड्डियों के जीवाश्म प्राप्त हुए हैं।

३) **होशंगाबाद (नर्मदा घाटी)**– यहाँ से भी बड़े पैमाने पर पादप जीवाश्म और डायनासोर जीवाश्म खोजे गए हैं।

४) **धार जिला**– यहाँ जुरासिक काल के जीवाश्म मिलने की जानकारी है।

५) **शहडोल और उमरिया क्षेत्र**– कोयला खदानों में वृक्षों और पौधों के जीवाश्म पाए गए हैं।

बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान (BSIP) लखनऊ, भारत का एक प्रमुख राष्ट्रीय

इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के भूवैज्ञानिक इतिहास में पादप जगत के विकास, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय स्थितियों तथा प्राचीन जैव विविधता का अध्ययन करना है। यहाँ पौधों के जीवाश्मों के आधार पर यह समझने का प्रयास किया जाता है कि करोड़ों वर्षों पहले धरती पर किस प्रकार के वृक्ष, झाड़ियाँ, पुष्प तथा अन्य पादप प्रजातियाँ विद्यमान थीं और उन्होंने किस प्रकार पृथ्वी के पर्यावरण को प्रभावित किया।

संस्थान में वैज्ञानिक विभिन्न चट्टानों, अवसादों और कोयले की खानों से प्राप्त पौधों के जीवाश्मों का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं। इन अध्ययनों से न केवल भारत की प्राचीन वनस्पतियों का इतिहास ज्ञात होता है, बल्कि जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और खनिज संपदा के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। संस्थान भूविज्ञान, भू–भौतिकी, जैवविज्ञान तथा रसायन विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों का समन्वय कर

अनुसंधान करता है।

यहाँ एक अत्याधुनिक **फॉसिल हर्बेरियम** और संग्रहालय भी है, जिसमें पादप जीवाश्मों का समृद्ध भंडार सुरक्षित रखा गया है। यह संग्रहालय छात्रों, शोधार्थियों और आम जनता के लिए ज्ञानवर्धक का प्रमुख केंद्र है। इसके अतिरिक्त संस्थान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई शोध परियोजनाओं से जुड़ा है और अन्य वैज्ञानिक संस्थाओं के साथ सहयोग करता है।

बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान का महत्व केवल वैज्ञानिक अनुसंधान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों को समझने में भी सहायक है। यहाँ किए जा रहे शोधों से हमें यह जानकारी मिलती है कि पृथ्वी पर समय-समय पर हुए जलवायु परिवर्तन और आपदाओं ने जैव-विविधता तथा मानव जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया।

अतः यह संस्थान न केवल भारत की वैज्ञानिक धरोहर है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पुरा विज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन का एक प्रमुख केन्द्र है। इसके योगदान से हमें अपने अतीत की वनस्पतियों को समझने और भविष्य के लिए पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है।

साहनी की स्मृति में वर्ष १९४६ में की गई थी। यह संस्थान भारतीय उपमहाद्वीप में पौधों के प्राचीन अवशेषों, जीवाश्मों तथा पुराविज्ञान (Palaeoscience) से संबंधित अनुसंधान का महत्वपूर्ण केंद्र है।

इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी के भूवैज्ञानिक इतिहास में पादप जगत के विकास, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय स्थितियों तथा प्राचीन जैव विविधता का अध्ययन करना है। यहाँ पौधों के जीवाश्मों के आधार पर यह समझने का प्रयास किया जाता है कि करोड़ों वर्षों पहले धरती पर किस प्रकार के वृक्ष, झाड़ियाँ, पुष्प तथा अन्य पादप प्रजातियाँ विद्यमान थीं और उन्होंने किस प्रकार पृथ्वी के पर्यावरण को प्रभावित किया।

संस्थान में वैज्ञानिक विभिन्न चट्टानों, अवसादों और कोयले की खानों से प्राप्त पौधों के जीवाश्मों का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं। इन अध्ययनों से न केवल भारत की प्राचीन वनस्पतियों का इतिहास ज्ञात होता है, बल्कि जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और खनिज संपदा के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। संस्थान भूविज्ञान, भू-भौतिकी, जैवविज्ञान तथा रसायन विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों का समन्वय कर अनुसंधान करता है।

यहाँ एक अत्याधुनिक **फॉसिल हर्बेरियम** और संग्रहालय भी है, जिसमें पादप जीवाश्मों का समृद्ध भंडार सुरक्षित रखा गया है। यह संग्रहालय छात्रों, शोधार्थियों और आम जनता के लिए ज्ञानवर्धन का प्रमुख केंद्र है। इसके अतिरिक्त संस्थान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई शोध परियोजनाओं से जुड़ा है और अन्य वैज्ञानिक संस्थाओं के साथ सहयोग करता है।

बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान का महत्व केवल वैज्ञानिक अनुसंधान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों को समझने में भी सहायक है। यहाँ किए जा रहे शोधों से हमें यह जानकारी मिलती है कि पृथ्वी पर समय-समय पर हुए जलवायु परिवर्तन और आपदाओं ने जैव-विविधता तथा मानव जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया।

अतः यह संस्थान न केवल भारत की वैज्ञानिक धरोहर है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पुराविज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र है। इसके योगदान से हमें अपने अतीत की वनस्पतियों को समझने और भविष्य के लिए पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है।

- भोपाल (म. प्र.)

मेरा प्रिय मित्र

– इंदिरा त्रिवेदी

एक छोटा–सा कस्बा था बीरपुर। बीरपुर की पाठशाला दूसरे गाँवों की पाठशालाओं की तुलना में न केवल थोड़ी बड़ी थी, बल्कि यहाँ के शिक्षक–शिक्षिकाएँ भी काफी पढ़े–लिखे थे। यही कारण था कि इस पाठशाला में आसपास के अन्य गाँवों के बच्चे भी पढ़ने आते थे। सोनू, दीपू, राज और मोहन पड़ोस के जतारा गाँव में रहते थे। वे चारों अच्छे मित्र थे। बल्कि यूँ कहें कि सोनू–दीपू और राजू–मोहन की जोड़ी जमती थी।

ऐसे ही और भी कई बच्चे दूर के गाँवों से यहाँ पढ़ने आते थे। इसी प्रकार नीरज, पंकज, अनीता–विनीता की जोड़ी भी यहाँ प्रसिद्ध थी। नियमित शाला आकर पढ़ाई के साथ मित्रों के बीच गप्पें लगाने में सारे बच्चों को बहुत आनंद आता था।

बीरपुर की इस पाठशाला में हर शनिवार बाल सभा का आयोजन होता था। कई तरह की प्रतियोगिताएँ भी समय–समय पर होती रहती थीं– कभी वाद–विवाद प्रतियोगिता, श्लोक–दोहे सुनाने की प्रतियोगिता, कभी कहानी–कविता तो कभी कुछ और अनूठी प्रतियोगिताएँ यहाँ आयोजित होती थीं, जिनमें भाग लेकर बच्चों को बहुत आनंद आता था।

पुरस्कार भी मिलता था। यही कारण थी कि बीरपुर के बच्चे और यहाँ की पाठशाला अपने जिले में काफी प्रसिद्ध थी। यहाँ पढ़ने वाले बच्चे भी होशियार माने जाते थे।

आज गुरुवार था और शनिवार को होने वाली प्रतियोगिता के बारे में आज छुट्टी के समय शिक्षक बतलाने वाले थे, अत: बच्चों में काफी उत्सुकता थी। छुट्टी की घंटी बजी, सारे बच्चे मैदान में आकर राष्ट्रगान के लिए एकत्रित हुए। राष्ट्रगान पश्चात जैसे कि होता आया है उनके शिक्षक नवीन जी ने कल की प्रतियोगिता के विषय की घोषणा की।

''कल की बाल सभा में प्रतियोगिता का विषय है 'मेरा प्रिय मित्र' तो बच्चो! आपको अपने प्रिय मित्र के बारे में बताना है कि वह आपको क्यों पसंद है और उसकी खूबियों के बारे में भी सबको बताना है।''

विषय सुनकर बच्चों के चेहरों पर मुस्कान छा गई। एक मीत था, जो खुश नहीं हुआ, क्योंकि मीत संकोची स्वभाव का लड़का था। यही कारण था कि उसका कोई विशेष मित्र नहीं बन पाया था।

छुट्टी के बाद सारे बच्चे घर की ओर रवाना हुए। मीत भी धीमे–धीमे कदमों से मुख्य द्वार की तरफ बढ़ रहा था, तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा, वह चौंक गया। उसने पीछे पलटकर देखा तो नवीन जी थे। वे मुस्कुराते हुए बोले ''क्यों मीत! परसों की बाल सभा के लिए तैयार हो ना? कितना आसान विषय है इस बार... और हाँ, इसमें सभी को भाग लेना भी अनिवार्य है।

''ज ज जी अवश्य लूँगा'' मीत लगभग हकलाते हुए बोला। नवीन जी हँसते हुए तेज कदमों से आगे निकल गए। तभी सोनू, दीपू, राजू और मोहन की चौकड़ी रास्ते में उसे मिल गई।

उनमें से दीपू बोला ''और क्यों भई मीत! बाल सभा के बारे में क्या इरादा है?''

सोनू बोला ''अरे वो क्या बोलेगा? आज तक उसके साथ किसी को देखा है? जो वो बेस्ट फ्रेंड के बारे में बताएगा।'' तभी राजू बोला ''कल देखना पूरा स्कूल परफॉर्म करेगा और ये अकेला बैठकर सबको सुनेगा?'' ''हाँ बिल्कुल'' कहते हुए मोहन ने भी उसके हाँ में हाँ मिलाई। और सभी ठहाका लगाकर हँस पड़े और वहाँ से चल दिए।

मीत सोचने लगा कि कहीं इन लोगों की बात सच तो नहीं हो जाएगी। मैं अकेला श्रोता बनकर तो नहीं बैठा रहूँगा? यह सोचते–सोचते उसके कदम

घर की ओर चल दिए।

घर पहुँचते ही माँ ने दरवाजा खोला। मुस्कुराते हुए उससे पूछा ''कैसा रहा बेटा! आज पाठशाला में और खाना खाया या नहीं?''

माँ के इन सारे सवालों का जवाब मीत ने अनमने ढंग से दिया। माँ ने पूछा ''क्या बात है, बड़े उदास लग रहे हो? शाला में कुछ हुआ क्या?''

''नहीं माँ! ऐसी कोई बात नहीं।'' कहकर माँ से जाकर लिपट गया। फिर थोड़ी देर में बोला ''माँ! शाला में शनिवार को बाल सभा है।''

माँ बोलीं ''तो...।''

इस बार का विषय है ''मेरा प्यारा मित्र!''

''तो इसमें क्या परेशानी है?'' माँ ने पूछा।

''वही तो दिक्कत है माँ....! मेरा कोई मित्र ही नहीं है। मुझे तो पढ़ना पसंद है, इसलिए मैं पढ़ता-लिखता रहता हूँ या फिर चित्र बनाता रहता हूँ, अब प्रिय मित्र कहाँ से लाऊँ?''

माँ ने समझाते हुए कहा ''देखो बेटा! प्रिय मित्र वह होता है, जिसके साथ हम अधिक से अधिक समय बिताते हैं, उसका साथ हमें अच्छा लगता है, उसके साथ हम प्रसन्न रहते हैं, है ना!''

मीत ''हाँ माँ!''

''तो तुम्हारे पास भी तो है प्रिय मित्र?'' माँ ने कहा ''वो कौन माँ? मैं समझा नहीं....।''

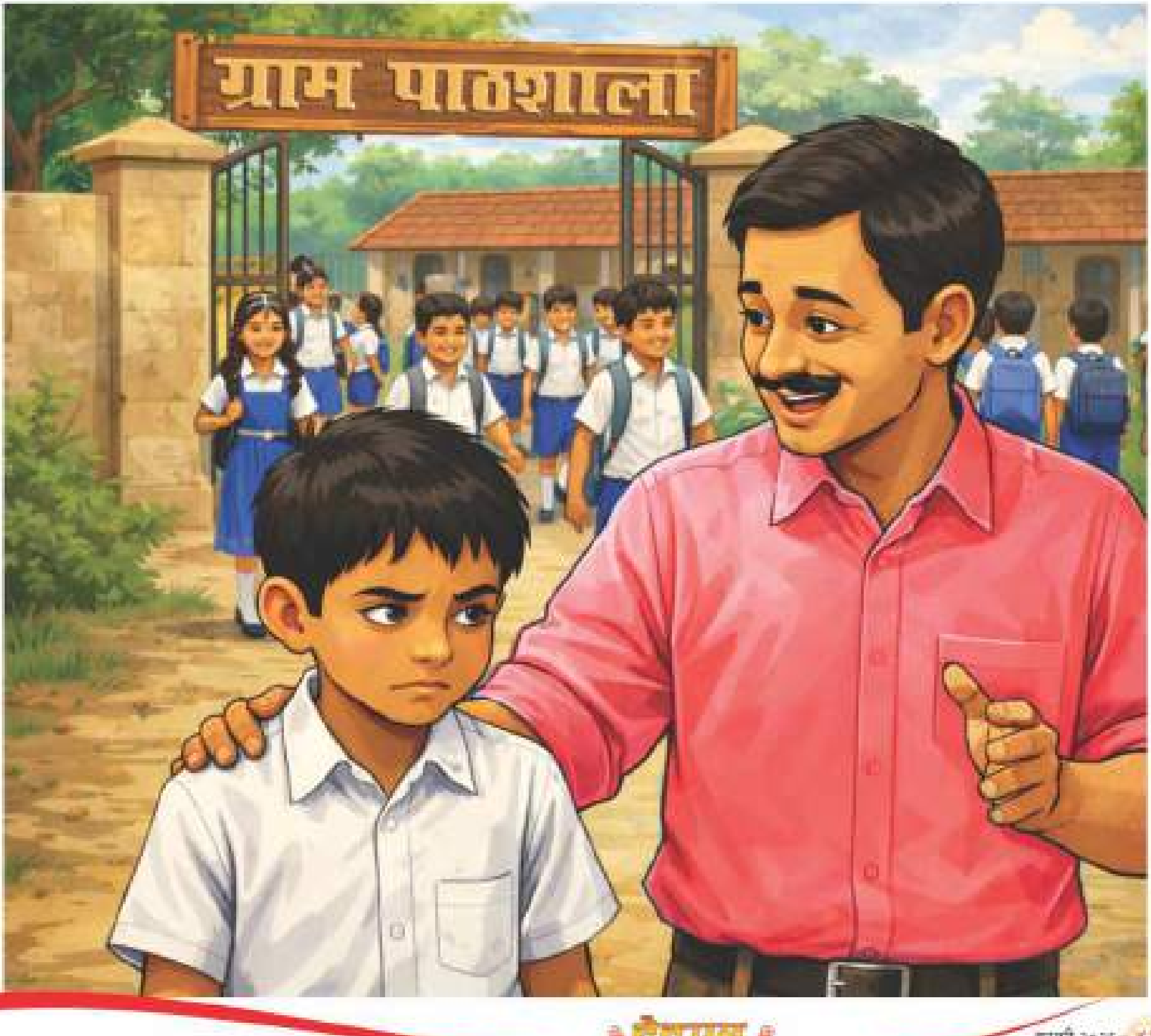

''अरे बुद्धू! ये किताबें... ये किताबें ही तो तुम्हारी सबसे अच्छी मित्र हैं।''

मीत आश्चर्य से माँ की ओर देखने लगा। फिर खुशी से उछलते हुए बोला ''हाँ माँ! आपने सही कहा, मैंने तो ऐसा सोचा ही नहीं.... और मैंने कहीं पढ़ भी है कि 'पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र होती हैं' कहते-कहते मीत के चेहरे पर मधुर मुस्कान छा गई। वह बोला ''हाँ, अब तो मैं भी इस प्रतियोगिता में भाग ले सकता हूँ। और वह खुशी-खुशी अपने कमरे में चला गया।

अगले दिन पाठशाला जाते समय उसके चेहरे पर निराशा के भाव नहीं अपितु खुशी के भाव झलक रहे थे और वह सबके सामने अपने प्रिय मित्र के बारे में बताने को उतावला था। भोजन अवकाश के बाद बालसभा शुरु हुई। बच्चों ने बारी-बारी से अपने मित्र के बारे में बहुत अच्छी-अच्छी बातें बताई।

तभी कार्यक्रम का संचालन कर रही शिक्षिका प्रतिभा दीदी ने उसका नाम पुकारा, ''अब मीत शर्मा कक्षा सातवीं से अपने प्रिय मित्र के बारे में हमें बताएँगे।''

सभी बच्चे सोच में पड़ गए कि आखिर मीत उनमें से किस का नाम लेगा और किस मित्र के बारे में बताएगा ? उसका तो कोई मित्र ही नहीं है। वह पढ़ने में होशियार अवश्य है, लेकिन किसी से बातचीत ही नहीं करता था... खैर सभी उसकी बात सुनने के लिए बैचेन थे।

तभी मीत अपने दोनों हाथ पीछे किए, जैसे हाथ में कुछ छिपाए हो, सामने उपस्थित हुआ और सबसे पहले उसने अपने शिक्षकों, सहपाठियों का अभिवादन किया। उसके बाद वह बोला ''मित्रो! जैसा कि आज की बालसभा का विषय है 'मेरा प्रिय मित्र' तो आप सभी यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि मेरा प्रिय मित्र कौन है ? तो साथियो! मेरी प्रिय मित्र मेरी किताबें हैं।

मुझे पुस्तकें या किताबें पढ़ना अच्छा लगता है। इसमें ज्ञान का बहुत बड़ा खजाना छिपा होता है। सामान्य ज्ञान, किसी विषय की जानकारी, प्रश्न-उत्तर, कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ, चुटकुले सब कुछ, इनमें क्या नहीं होता। इसे हम संग्रह करके या सहेजकर भी रख सकते हैं। जब भी मैं कहीं यात्रा पर बाहर जाता हूँ तो अपने साथ अपनी पसंद की पुस्तकें ले जाना नहीं भूलता और मैं अपने मित्रों के जन्मदिन पर भी पुस्तकें ही उपहार में देता हूँ। गर्मी की छुट्टियों में भी ये किताबें एक अच्छे मित्र की भूमिका निभाती हैं। मेरे माँ-पिताजी भी जो किताब की जिद मैं करता हूँ, वे मुझे दिलवाते हैं। मैं जानता हूँ कि और बच्चों की तरह मेरे भी मित्र होने चाहिए, लेकिन शायद मेरे संकोची स्वभाव की वजह से मेरे मित्र नहीं बन पाते। फिर भी मेरा ये प्रिय मित्र मुझे बेहद पसंद है।''

मीत के इतना कहते ही पूरा सभागृह तालियों से गूँज उठा। शिक्षकों ने भी ताली बजाकर मीत की प्रशंसा की। यही नहीं, कई बच्चे उसके आसपास आकर खड़े हो गए और बोले ''मीत! हम तुम्हारे मित्र बनना चाहते हैं।''

मीत के चेहरे पर मुस्कान खिल गई। तभी उनमें से एक बोला ''तुम इतनी किताबें पढ़ते हो, तुममें जानकारी का भंडार भरा है, तुम्हें अपना मित्र बनाने से हमारा भी ज्ञान बढ़ेगा।'' तभी एक और बोला ''हमारे शिक्षक भी कहते हैं कि संगति का असर पड़ता है। हम तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी तरह बुद्धिमान भी बन जाएँगे।''

सभी जोरों से हँसने लगे और आपस में गले मिलने के बाद अपने स्थान पर बैठ गए। अब बाल सभा समाप्त होने की घोषणा हुई। राष्ट्रगान पश्चात् सभी बच्चे उछलते-कूदते अपने-अपने घरों की ओर चल दिए। आज मीत बहुत खुश था, क्योंकि उसे ढेर सारे मित्र जो मिल गए थे।

- भोपाल (म. प्र.)

नए विज्ञान शिक्षक

– गोपाल शरण शर्मा

आदित्य नारायण अपने गाँव सकतपुर के विद्या माँ शारदा बाल विद्या मंदिर की नौवीं कक्षा का छात्र था। उसके पिता रेलवे में कार्यरत थे। आदित्य अपनी माँ, दादा–दादी और छोटी बहन मुदिता के साथ रहता था। वह कुछ दिनों से चिंतित था। उसके विज्ञान विषय के शिक्षक श्रीमान रामेश जी का स्थानांतरण दूसरे विद्यालय में हो गया था। उनकी जगह पर आने वाले शिक्षक कैसे होंगे यह सोचकर आदित्य थोड़ा परेशान था। अगले दिन जब वह विद्यालय पहुँचा तो उसने अपने मित्र दीपक से पूछा ''नए शिक्षक आ गए क्या ?'' दीपक ने कहा ''हाँ आ गए हैं।''

सभी ने देखा कि विद्यालय के प्रधानाचार्य जी के साथ एक ऊँचे कद के, सौम्य व्यक्ति ने ऐनक लगाए कक्षा में प्रवेश किया। प्रधानाचार्य जी ने कहा कि बच्चों ये आपके नए विज्ञान शिक्षक हैं जो आपको विज्ञान पढ़ाएँगे। इनका नाम आलोक शर्मा है।

परिचय करा कर प्रधानाचार्य जी कक्षा से चले गए। अब आलोक जी ने मुस्कुरा कर पहले सभी बच्चों से उनके नाम पूछे फिर कहा ''बच्चों विज्ञान एक बड़ा ही रोचक विषय है। हमारे आस–पास जो भी घट रहा है वह विज्ञान से संबंधित है। विज्ञान के सिद्धांत प्रयोगों पर आधारित हैं जिन्हें हम धीरे–धीरे सीखेंगे।'' कक्षा की समाप्ति पर बच्चों ने तालियाँ बजा कर उन के प्रति अपना सम्मान प्रकट किया।

शाम को गृह कार्य करने के बाद आदित्य अपनी बहन मुदिता के साथ सैर को निकल पड़ा। रास्ते में एक उन्हें सौम्या, अनन्या और दीपक भी मिल गये। जब वह पंचायत भवन के पास से निकले तो उससे सटे घर के आँगन में सभी ने एक लड़की को देखा। मुदिता ने कहा यह तो आराध्या है जो कि आज ही मेरी सातवीं की कक्षा में आई है।

''चलो उससे बात करें।'' मुदिता ने आराध्या से मुस्कुरा कर हाथ मिलाया और पूछा तुम यहाँ रहती हो। आराध्या ने कहा हाँ मैं यहाँ अपने माता–पिता के साथ रहती हूँ। आराध्या की आवाज सुनकर घर के भीतर से उसके पिताजी बाहर निकल आए।

बच्चों ने देखा यह तो उनके विज्ञान शिक्षक हैं। बच्चों ने उनसे नमस्ते किया, उनने मुस्कुरा कर उत्तर दिया फिर सभी को घर के अंदर ले गए। आलोक जी ने बच्चों से बात करते हुए कहा कि बच्चों आज विज्ञान का युग है। समय के साथ तकनीक में तेजी से बदलाव आ रहा है। जहाँ विज्ञान का उपयोग लाभकारी होता है वहाँ कभी–कभी यह हानिकारक भी हो सकता है। आदित्य ने घर को देखते हुए एक कोना ऐसा देखा जहाँ शिक्षक जी की किताबें रखी हुई थीं। आदित्य ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की तो उनने बताया कि यह विज्ञान सहित अन्य महत्वपूर्ण विषयों की पुस्तकें हैं। इन किताबों में ज्ञान भरा हुआ है। आज हम किताबों को पढ़ने की आदत छोड़ते जा रहे हैं। अनन्या ने पूछा कि क्या वह उन किताबों को पढ़ सकते हैं? वे बोले ''शाम को स्कूल में पढ़ाई करने के बाद वह एक घंटे के लिए यहाँ आकर किताब पढ़ सकते हैं।'' यह बात सुनकर सभी प्रसन्न हो गए। घर–घर लौटते समय सभी बच्चों को खुशी हुई। उनके मन में एक वैज्ञानिक बनने का सपना जन्म लेने लगा था।

– मथुरा (उ. प्र.)

सुधर गया मयंक

– डॉ. अलका जैन 'आराधना'

शौर्य और मयंक की मित्रता पूरे विद्यालय में मशहूर थी। दोनों एक–दूसरे के पूरक थे। लेकिन हाल ही में मयंक ने गौरव के साथ अधिक समय बिताना प्रारंभ कर दिया था। गौरव कक्षा में नया आया था और अपने साथ हमेशा स्मार्टफोन लाता था। गौरव ने शाला में बताया था कि कैब बुक करने के लिए मोबाइल रखना आवश्यक है। पर वह अधिकांश इसे रिसेप्शन पर जमा करने के बजाय कक्षा में ले आता था।

मयंक गौरव ने स्मार्टफोन से बहुत प्रभावित हुआ। गौरव ने उसे कई खेलों के बारे में बताया और यह भी कहा कि ये दिमाग तेज करने वाले खेल हैं।

गौरव अधिकांश उससे कहता था, ''तुम इन खेल को खेलोगे तो तुम्हारी योग्यता बढ़ जाएगी।''

धीरे–धीरे मयंक ने गौरव के साथ इन खेलों में इतना समय बिताना प्रारंभ कर दिया कि उसका भोजनावकाश (लंच टाइम), कक्षा का समय सब बर्बाद होने लगा।

गौरव और मयंक अधिकांश कक्षा के सबसे पीछे बैठते थे। जब शिक्षक ब्लैक बोर्ड पर लिखते या पढ़ाते तो दोनों चुपचाप स्मार्टफोन पर गेम्स खेलते। गौरव मयंक को सिखाता कि कैसे शिक्षक की दृष्टि से बचकर खेलना है।

गौरव उसे शिक्षकों की नजर से बचने के कई आइडिया देता था, ''देखो, मयंक, यदि शिक्षक हमारी तरफ देखें तो तुरंत स्क्रीन ऑफ कर देना और यदि कोई तुम्हें देखे तो पेन उठाकर ऐसे दिखाना जैसे कुछ लिख रहे हो।''

धीरे–धीरे मयंक का ध्यान पढ़ाई से हटने लगा। एक दिन मैथ्स की क्लास में जब शिक्षक ने मयंक से प्रश्न पूछा तो वह सकपका गया। ''मयंक! तुम तो हमेशा उत्तर देते थे। आज क्या हुआ?'' शिक्षक ने पूछा।

मयंक ने सिर झुका लिया। उसके मित्र शौर्य ने धीरे से कहा– ''पढ़ाई पर ध्यान दो, मयंक! यह सब तुम्हारे भविष्य के लिए अच्छा नहीं है।''

किन्तु मयंक ने शौर्य की बात को अनदेखा कर दिया। एक दिन गौरव ने मयंक से कहा– ''तुम्हारे पिताजी का फोन है ना? उसमें यह नया एप इंस्टॉल कर लो। यह हमारे फोन से भी अच्छा चलेगा और चिंता मत करो, कोई पता नहीं लगाएगा।''

मयंक ने चुपके सेअपने पिताजी के फोन में वह एक इंस्टॉल कर लिया। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि वह ऐप एक खतरनाक वायरस से जुड़ा हुआ है।

कुछ दिनों बाद, मयंक के घर में हड़कंप मच गया। पिताजी का बैंक अकाउंट पूरी तरह खाली हो गया था।

''५० लाख रुपये गायब हो गए हैं।'' माँ ने घबराते हुए कहा। पिताजी ने तुरंत बैंक और पुलिस को सूचना दी। साइबर एक्सपर्ट ने जाँच शुरू की।

जाँच के समय यह पता चला कि पिताजी के फोन में पिछले दिनों एक संदिग्ध ऐप इंस्टॉल हुआ था। उस एप को पिताजी के फोन की सारी जानकारियाँ मिल गई थी, बैंक एकाउंट डिटेल्स और ओटीपी भी। मयंक को अनुभव हो गया कि यह वही ऐप है जो उसने इंस्टॉल किया था।

डरते हुए उसने अपने पिताजी को सब सच बता दिया।

''पिताजी! वह ऐप मैंने इंस्टॉल किया था। मुझे क्षमा कर दीजिए। मुझे नहीं पता था कि यह इतना खतरनाक होगा।''

पिताजी का गुस्सा सातवें आसमान पर था। वे बोले– ''इस लापरवाही के कारण से हमारी सारी मेहनत की कमाई चली गई?''

जब पुलिस ने गौरव और मयंक से पूछताछ की तो पता चला कि गौरव को इस ऐप के खतरे के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन उसने माना कि उसने मयंक को गेम्स में उलझाने के लिए इस ऐप का सुझाव दिया था।

''मैंने सोचा था कि यह केवल एक गेमिंग ऐप है। मुझे नहीं पता था कि इसमें वायरस हो सकता है।'' गौरव ने कहा।

पुलिस ने दोनों बच्चों को सख्त चेतावनी दी और गौरव के फोन को भी फॉरेंसिक जाँच के लिए जब्त कर लिया।

शौर्य को जब इस घटना का पता चला तो वह मयंक से मिला।

उसने कहा- ''मयंक! तुमने जो किया वह गलत था लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूँगा। मेरे मामा साइबर क्राइम एक्सपर्ट हैं। मैं उनसे बात करता हूँ।''

शौर्य के मामा ने पुलिस की सहायता से हैकर्स को ट्रैक किया। दो सप्ताह के कड़े परिश्रम के बाद स्कैमर्स को पकड़ लिया गया। पिताजी का पैसा भी वापस आ गया।

मयंक ने शौर्य से कहा- ''मैंने तुम्हारी दोस्ती का भी अपमान किया और स्वयं को मुसीबत में डाला। मुझे क्षमा कर दो। और धन्यवाद मित्र! यदि तुम नहीं होते तो मैं शायद कभी इससे बाहर नहीं आ पाता।''

शौर्य ने मुस्कुराते हुए कहा- ''सच्चे मित्र वही होते हैं। जो कठिनाई के समय में साथ दें। लेकिन वादा करो कि अब से तुम कोई ऐसा काम नहीं करोगे जो तुम्हारे लिए या दूसरों के लिए नुकसानदायक हो।''

मयंक ने वादा किया कि वह अब से मोबाइल गेम्स और गलत संगति से दूर रहेगा। उसने गौरव से भी दूरी बना ली और अपने पढ़ाई पर ध्यान देना प्रारंभ किया।

- जयपुर (राजस्थान)

गीत पहेली

– डॉ. वेद प्रकाश अग्निहोत्री

अणु–परमाणु खोज कर किसने
उन्नति पथ दिखलाया।
कम्प्यूटर, टी. वी., ए. आई.
बोलो कौन बनाया।।

किसने विद्युत की धारा से
सारा जग चमकाया।
बिन चालक का ड्रोन बना, नभ
किसने उसे उड़ाया।।

किसने अंतरिक्ष में खोजी
जीवन की आसानी।
चन्दा मामा पर जा कर के
खोजा उसने पानी।।

जाने कितने ग्रह–उपग्रह पर
अपनी धाक जमाई।
नहीं रोक पायीं हैं उसको
बाधाएँ कठिनाई।।

वह करता रहता है प्रतिदिन
खोजें नई–नवेली।
बता सको तो बतलाओ यह
मेरी बाल पहेली।।

– गोला गोकर्णनाथ (उ. प्र.)

✻✻✻✻✻

उत्तर – वैज्ञानिक।

पहेलियाँ

बाल विज्ञान पहेलियाँ

– डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

(१)
इसने समय हमारा बचाया
घंटों का काम मिनटों में
और मिनटों का काम
सेकंडों में करना सिखाया
आसमान में उड़ना हमें सिखाया
इसी के बूते पर ही देश ने कदम
आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया।

(२)
यह घंटों गरम को गरम रखता
रौनक और शान पार्टियों की बनता
चालन, संवहन और विकिरण
इन तीनों विधियों द्वारा
ऊष्मा का रोकता यह स्थानांतरण।

(३)
लोगों का जीवन दूभर यह कर रहा
यह वायु, जल, धरा संदूषित सभी को कर रहा
बढ़ा रहा है हर पल यह जीवन का संकट
बीमार पड़ रहे हर पल यह जीवन का संकट
बीमार पड़ रहे हैं लोग इससे
और पहुँच रहे हैं मरघट।

– दिल्ली

✻✻✻✻✻

उत्तर – १) वायुयान। २) थर्मस फ्लास्क।
३) प्रदूषण।

पुस्तक परिचय

डॉ. विमला भण्डारी बाल साहित्य जगत का एक सुपरिचित नाम है। संपादन व लेखन से माँ भारती को साहित्यकोश भरते हुए आपने अनेक रचनाएँ, पुस्तकें लिखीं है। प्रस्तुत है तीन पुस्तकों का परिचय।

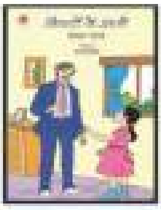

सितारों से आगे

मूल्य- ३५/-

पन्द्रह रोचक बाल कहानियों का एक ताजा गुलदस्ता आप बाल पाठकों के लिए सजाया है यह निश्चित रूप से आपको लुभाएगा।

प्रकाशक- नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया नेहरू भवन, ५, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-२, वसंत कुंज, नई दिल्ली-७०

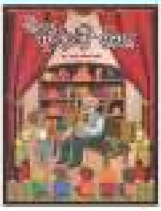

रोचक एकांकी संग्रह

मूल्य- २००/-

एकांकी बाल मन को शीघ्र आकर्षित और गहरे प्रभावित करने वाली साहित्यिक विधा है। प्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. प्रीति प्रवीण खरे के इस बाल एकांकी संग्रह में चार बाल मन को छूने, सहलाने वाले एकांकी हैं।

प्रकाशक- अस्मि प्रकाशन भोपाल- (म. प्र.)

सपने

मूल्य- ९९/-

हिन्दी बाल साहित्य संसार में राजस्थान की धरती से अपना योगदान देने वाले वरेण्य बाल साहित्यकार लेखक व संपादक श्री दीनदयाल जी शर्मा ने इस पुस्तक से अपना एक महत्वपूर्ण बाल नाटक प्रस्तुत किया है।

प्रकाशक- सम्पर्क प्रकाशन १०/२२, आरएचबी कॉलोनी, हनुमानगढ़ संगम-३३५५१२ (राजस्थान)

विनीता चौहान, मालवा की धरती से बाल साहित्य का एक चमकता नक्षत्र हैं आपकी दो कृतियों का परिचय यहाँ प्रस्तुत हैं।

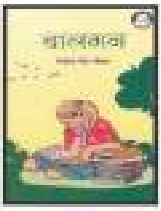

बालमन

मूल्य- १९९/-

यह बाल कविता संकलन किसलय व किशोर दो उपखण्डों में वर्गीकृत है जिसमें आपकी ५१ बाल कविताएँ बहुत विविधतापूर्ण विषय समेटे हुए हैं।

फूलों सी कहानियाँ

मूल्य- १९९/-

परोपकार एक प्रमुख मानवीय मूल्य है। इस संग्रह से परोपकार है। ३२ रोचक कहानियाँ हैं जो बोधक भी हैं और रोचक भी।

प्रकाशक- साहित्य झरोखा प्रकाशन Email- sahityajharokha@gmail.com

देवपुत्र बाल महोत्सव

'देवपुत्र' बाल मासिक पत्रिका के तत्वावधान में आयोजित 'देवपुत्र बाल महोत्सव २०२५-२६' का भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन शिवपुरी में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा, संस्कार और आत्मविश्वास का उत्कृष्ट प्रदर्शन देखने को मिला।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री. अमन सिंह राठौड़, मुख्य वक्ता विद्या भारती मध्य भारत प्रांत के संगठन मंत्री श्री. निखिलेश महेश्वरी, अध्यक्ष डॉ. पवन कुमार श्रीवास्तव तथा विशिष्ट अतिथि श्री. मोहनलाल गुप्ता एवं पत्रिका के प्रबंध संपादक श्री नारायण चौहान उपस्थित रहे। अतिथियों ने 'देवपुत्र' पत्रिका की भूमिका को रेखांकित करते हुए बच्चों में संस्कार, अनुशासन, राष्ट्रप्रेम और चारित्रिक गुणों के विकास पर बल दिया।

बाल महोत्सव के अंतर्गत सुनो कविता, सुनो कहानी, तात्कालिक भाषण, चित्रकला एवं निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें बाल एवं किशोर वर्ग के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी रचनात्मकता का परिचय दिया। विजेता प्रतिभागियों को प्रणाम-पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

लगभग ५५३ प्रतिभागी भैया-बहनों, आचार्य-दीदी, अभिभावकों, निर्णायक मंडल एवं गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति ने आयोजन को गरिमामय बनाया।

उल्लेखनीय है कि 'देवपुत्र' हिन्दी बाल साहित्य की एक प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका है, जिसका संचालन विद्या भारती के मार्गदर्शन में सरस्वती बाल कल्याण न्यास द्वारा किया जाता है। यह पत्रिका आज देशभर में लगभग एक लाख प्रतियों के प्रसार के साथ बच्चों में राष्ट्रप्रेम और नैतिक मूल्यों के संवर्धन का सशक्त माध्यम बनी हुई है।

संघ को समझाने वाला रोचक बाल उपन्यास है देवपुत्र का विशेषांक

राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक प्रसार वाली बाल पत्रिका 'देवपुत्र' के 'संघ परिचय अंक दिसम्बर २०२५' का विमोचन ३० नवम्बर २०२५ को इंदौर प्रवास के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह दत्तात्रेय हौसबाले जी ने किया। 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' द्वारा प्रकाशित तथा श्री. गोपाल माहेश्वरी द्वारा संपादित इस पत्रिका का यह अंक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विशेषांक के रूप में आया है।

शाखा पर होने वाले नित्य प्रार्थना के सरल अर्थ समझाने से आरंभ इस महत्वपूर्ण अंक में संघ की रीति, नीति, कार्यपद्धति, शाखा इत्यादि सभी बातों को एक बाल उपन्यास की रोचक शैली में नाट्य व कथा तत्व को समाहित करते हुए श्री. गोपाल माहेश्वरी ने लिखा है। संघ की स्थापना, भगवाध्वज का महत्व, संगठित शक्ति की आवश्यकता, पूज्य डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी का राष्ट्र के प्रति समर्पित संकल्प व जीवन संघर्ष, हिन्दू राष्ट्र के मायने, संघ का अर्थ, संरचना, प्रार्थना तथा प्रचारक की भूमिका, शाखा में संस्कार, खेल, आनंद और राष्ट्रभक्ति भाव का प्रादुर्भाव, शाखा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कैसे विशेष, भारतीय पर्व और उत्सवों को सपरिवार मनाने की परंपरा, समाज में मातृशक्ति का महत्व व सम्मान, पूज्य श्रीगुरुजी के जीवन से नयी पीढ़ी की प्रेरणा, प्रकृति के प्रति प्रेम, समाज व राष्ट्र के प्रति गौरव व स्व का भाव तथा स्वराष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव रखते हुए जीवनयापन करने में ही सार्थकता को स्पष्ट किया गया है। इस सम्पूर्ण बाल कथा में दादा-दादी और बच्चों के परस्पर सहज, सरल और बालमन के अनुरूप संवादों के माध्यम से सारी बात समझायी गयी है। छोटी-छोटी कहानी जैसे भागों में विभक्त होने से और प्रत्येक खण्ड में सुन्दर व भावपूर्ण चित्रांकन होने से यह अंक अधिक रोचक व उपयोगी बन गया है। इन कथाओं को शाखा में सुनाना भी श्रेयस्कर हो सकता है। यह पढ़ने में अत्यंत आनंददायक और बालमन में सहजग्राह्य है। निश्चित ही बच्चे इसे रुचिपूर्वक पढ़ेंगे भी और संघ के महत्व को समझेंगे भी। इस कथानक को विद्यालयों में सरलता से मंचित भी किया जा सकता है।

– उमेश कुमार चौरसिया
अजमेर (राजस्थान)

संघ ग्रन्थ

आदरणीय भाई साहेब,
सादर प्रणाम, जय श्रीराम।

संघ के बारे में सम्पूर्ण जानकारी से ओत: प्रोत: देवपुत्र का यह मात्र दिसम्बर अंक ही नहीं होकर संघ का एक तरह से ग्रन्थ हो गया है जिसमें संघ की पूर्ण जानकारी देकर आपने इस अंक को संघ ग्रन्थ बना दिया जिसके लिए आप व पूरा देवपुत्र परिवार का हार्दिक आभार!

– पवन पहाड़िया
डेह, नागौर
(राजस्थान)

एक सवाल

उबले हुए आलू का छिलका आसानी से कैसे निकल जाता है ?

भारत में आलू का उपयोग सर्वाधिक किया जाता है। उसकी सब्जी भी बनती है और अनेक प्रकार के पकवान भी। इसे प्रायः छिलका छीलकर खाया जाता है। कच्चे आलू की अपेक्षा उबले हुए आलू का छिलका आसानी से निकल जाता है। वास्तव में आलू का छिलका द्वितीयक मोटी कार्क कोशिकाओं का बना होता है। इसमें 'सेलुलोस' की मात्रा अधिक होती है। इन कोशिकाओं की भित्तियों में अंतर निर्भर करने वाले पदार्थ 'लिग्निन' और 'सुबेरिन' इसकी कोशिकाओं को पर्याप्त यांत्रिक एवं संरचनात्मक मजबूती प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त आलू स्टार्च प्रचुर 'पैरेन्काइमी' कोशिकाओं का बना हुआ होता है। इन कोशिकाओं की दीवारें सेलुलोस के सूक्ष्म तंतुकों की बनी होती हैं जो अक्रिस्टलीय 'मैट्रिक्स' में अंतःस्थापित होती है।

आलू के छिलके और गूदे के बीच भरे पेक्टिन पदार्थ आस-पास की कोशिकाओं को जोड़ने के लिए कोशिकीय सीमेंट का कार्य करते हैं। इसी कारण कच्चे आलू को हाथ से छीलने पर उसका छिलका आसानी से नहीं उतरता। किन्तु आलू को उबालने पर ये पेक्टिन पदार्थ विघटित हो जाते हैं जिससे आलू के गूदे व छिलके की कोशिकाओं के मध्य अन्तर्कोशिकीय सम्बन्ध कमजोर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त आलू की 'पैरेन्काइमी' कोशिकाओं में पानी भर जाने से उनकी मोटाई और सघनता में भी परिवर्तन आ जाता है और वह नरम हो जाता है। इन्हीं परिवर्तनों के कारण उबले हुए आलू का छिलका आसानी से निकल जाता है।

© Sanket

धूप

– रामगोपाल राही

सब ने जाना सब ने माना,
ऊर्जा का है धूप खजाना।
धूप का अपना आना-जाना,
सुबह आना-शाम को जाना।।

धूप का अपना ताना-बाना,
उजियाले को संग में लाना।
सुबह, दुपहरी, रहे शाम तक,
फिर चुपके से गुम हो जाना।।

हिमगिरी चोटी को चमकाना,
पहले-नदी किनारे आना।
धूप सुनहरी तरुवर ऊपर,
बैठे, पंछी उन्हें जगाना।।

सूरज चमके-धूप का आना,
निशा अँधेरा-दूर भगाना।
सोए जग को रोज जगाना,
स्वर्णिम धूप सवेरा लाना।।

– बूँदी (राजस्थान)

सर्दी की धूप

– दिनेश विजयवर्गीय

घर की छत पर पहले आती,
अलसाई-सी लगती धूप।
बूढ़े बच्चों के मन भाती,
तन को खूब सुहाती धूप।।

देर से आती जल्दी जाती,
भागम-भाग मचाती धूप।
जब-जब चलती शीत लहर,
थर-थर खूब कँपाती धूप।।

धुंध कोहरा जब हो जाता,
घंटों नजर ना आती धूप।
सरसों के पीले खेतों में,
मंगल गीत सुनाती धूप।।

– बूँदी (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८१७७/८१
प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२६ प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२६ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २५०/- १५ वर्षीय सदस्यता २५००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी